Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanththimes.org

भिक्षु वाणी

जे सूर करें पचखांण, ते एक धारा रहे।
त्यां जीतब जनम सुधारियो।।

शूरवीर आदमी जो संकल्प करता है उसे एकधार निभाता है। उसका जीवन धन्य हो जाता है।

–आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली ● वर्ष 27 ● अंक 43 ● 27 जुलाई - 02 अगस्त 2026 प्रत्येक सोमवार ● प्रकाशन तिथि : 25-07-2026 ● पेज 16 ₹ 10 रुपये

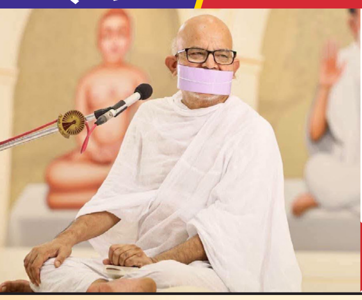

'प्रमाद और हंसी-मजाक से खाली होता है पुण्य का बैंक' : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 14

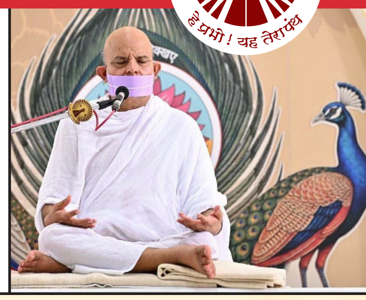

'मौत की गारंटी पक्की है! लाइफ इंश्योरेंस नहीं, धर्म का प्रीमियम ही बचाएगा': आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 16

Address Here

केवट-राम संवाद के मर्मस्पर्शी संदर्भ

मल्लाह कभी मल्लाह से मल्लाही नहीं लेता भैया! : आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्य प्रवर ने फरमाया—जैसे केवट ने नदी पार कराई, वैसे ही गुरु और धर्म आत्मा को भवसागर से पार लगाते हैं

लाडनूं।
18 जुलाई, 2026

अहिंसायात्रा प्रणेता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में उपस्थित चतुर्विध धर्मसंघ को निर्धारित विषय ''जहाज में सवारः पहुंचे भवपार'' पर अमृत देशना प्रदान की। पूज्य प्रवर ने आगम के गूढ़ रहस्यों और रामायण के प्रेरक प्रसंगों के माध्यम से जीवन रूपी नौका को सही दिशा देने का पाथेय दिया।

शरीर ही हमारी नौका, विवेक से तय करें कि नौका छिद्रयुक्त है या निश्छिद्र!

१. औदारिक शरीर रूपी नौकाः आचार्यप्रवर ने फरमाया कि यह संसार जन्म-मरण की परंपरा वाला एक महासमुद्र है और हमारा औदारिक शरीर इस समुद्र में तैरने वाली नौका है। दो प्रकार की नौकाएँः आगम में बताया गया है कि नौका दो तरह की होती है—एक 'आश्रव वाली' (छेदों वाली) जो समुद्र में डुबो देती है, और दूसरी 'निराश्रव' (बिना छेद वाली) जो सुरक्षित किनारे पर पहुँचा देती है।

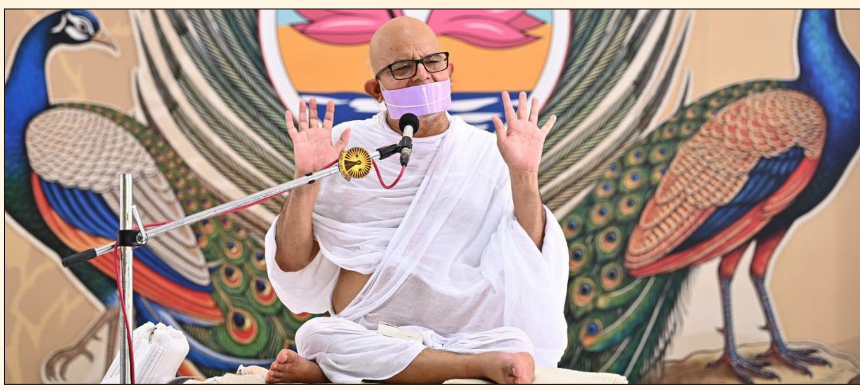

२. अशुभ योग से बचें : यदि शरीर से पाप और अशुभ योग की प्रवृत्ति होती है, तो नौका में छेद हो जाते हैं जो कर्मबंध का कारण बनते हैं। संयमी जीवन, सम्यक्त्व (सम्यक दर्शन) और चारित्र के मेल से ही यह नौका बिना छेद वाली बनती है और मोक्ष तक ले जाती है।

केवट और श्रीराम का अद्भुत प्रसंग
मल्लाह मल्लाह से मजदूरी नहीं लेता

पूज्य प्रवर ने केवट और भगवान श्रीराम की कथा का मर्मस्पर्शी संदर्भ देते हुए समझाया।

1. किराया चुकाने का आग्रह : जब श्रीराम ने गंगा पार कराने के बाद केवट से किराया देना चाहा ताकि वे ऋणमुक्त हो सकें, तो केवट ने बड़ी विनम्रता से मना कर दिया।

2. केवट का भावुक उत्तर : केवट ने कहा—'मल्लाह कभी मल्लाहों से मल्लाह ही लेते हैं भैया, मजदूर कभी मजदूरों से मजदूरी लेते हैं भैया।' मैंने आपको थोड़े से जल से पार कराया है, जब मेरी बारी आए तो आप मुझे इस भवसागर से पार लगा देना।

3. गुरु की शरण का महत्व : इस कहानी से आचार्यश्री ने संदेश दिया कि जैसे केवट ने श्रीराम से भवसागर पार लगाने की प्रार्थना की।

(शेष पेज 13 पर)

'कहाँ है वो शाश्वत धाम, जहाँ कोई दुःख छू भी नहीं सकता?': आचार्यश्री महाश्रमण

सुधर्मा सभा में खुला 'शाश्वत धाम' का रहस्य; आचार्यश्री ने फरमाया—आठों कर्म काट दिए तो लोकाग्र में मिलेगी परमानेंट नो-एंट्री दुःखों से!

लाडनूं।
20 जुलाई, 2026

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने जैन विश्व भारती परिसर स्थित विशाल सुधर्मा सभा में 'शाश्वत वास का स्थान' विषय पर पावन पाथेय प्रदान किया। पूज्य प्रवर ने शारीरिक व मानसिक दुःखों के मर्म को समझाते हुए मोक्ष रूपी शाश्वत स्थान की महत्ता पर प्रकाश डाला।

दुःख दो प्रकार केः शारीरिक और मानसिक समाधि का महत्व–

१. शारीरिक कष्ट और बीमारियाँः आचार्यप्रवर ने फरमाया कि संसार में मनुष्य, पशु, स्थावर और विकलेन्द्रिय आदि सभी जीवों के शरीर में कष्ट और कठिनाइयाँ आती हैं। बीमारियों के कारण लोगों को डॉक्टर और अस्पताल का सहारा लेना पड़ता है।

२. मानसिक दुःख व अवसादः शरीर स्वस्थ होने पर भी पद का वियोग, पदावनति या प्रिय वस्तु/व्यक्ति के बिछड़ने से मन दुःखी हो जाता है। तात्त्विक भाषा में यह 'आर्त्त ध्यान' है, जो व्यक्ति को अवसाद (डिप्रेशन) में धकेल देता है।

> शरीर में बीमारी हो सकती है, पर मन में समाधि रहे तो इंसान हर दुख से पार पा सकता है।
> **–आचार्यश्री महाश्रमण**

३. मनोबल रखें मजबूत : पूज्य प्रवर ने सीख दी कि यदि शरीर में कोई समस्या हो, लेकिन मन में शांति और समाधि बनी रहे तो यह श्रेष्ठ बात है।

तन और मन दोनों में अशांति होना खतरनाक है, इसलिए शारीरिक कष्ट में भी मनोबल मजबूत रखना चाहिए।

(शेष पेज 13 पर)

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
27 जुलाई - 02 अगस्त 2026

आग का जवाब 'बर्फ' से देना सीखें! : आचार्यश्री महाश्रमण

सुधर्मा सभा में 'प्रज्वलित अग्नि' पर आचार्यश्री महाश्रमण का पाथेय;—'गुस्सा और अहंकार मन में ही दफन कर दें, जुबां पर आया तो सब भस्म कर देगा।'

लाडनूं।
15 जुलाई, 2026

नेमानंदन,महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मुख्य मंगल प्रवचन कार्यक्रम में 'प्रज्वलित अग्नि को बुझाएं' विषय पर चतुर्विध धर्मसंघ को पावन पाथेय प्रदान किया। पूज्य प्रवर ने आगम के हवाले से मुनि केशी और स्वामी गौतम के प्रसंग का उल्लेख करते हुए बताया कि मनुष्य के भीतर क्रोध, मान, माया और लोभ रूपी अग्नियाँ निरंतर प्रज्वलित हो रही हैं, जिन्हें साधना रूपी जल से ही शांत किया जा सकता है।

क्या है भीतर की अग्नि? (कषाय और आश्रव)–

१. मुनि केशी-गौतम संवाद : आगम में मुनि केशी के प्रश्न पर स्वामी गौतम ने समाधान दिया था कि भीतर की उष्ण अग्नि को उत्तम जल से बुझाया जा सकता है।

२. कषाय ही असली अग्नि: आचार्यश्री ने फरमाया कि क्रोध, मान, माया और लोभ रूपी कषाय ही वह आग हैं जो मानव के भीतर जलती रहती है। यह कषाय सामान्य गृहस्थ ही नहीं, बल्कि छठे-सातवें गुणस्थान में स्थित साधु के भीतर भी सूक्ष्म रूप से चलती रहती है।

३. अशुभ योग से बचाव : यदि कषाय मन में आ जाए और मनोयोग अशुभ हो जाए, तो प्रयास यह होना चाहिए कि वह वाणी और शरीर तक न पहुँचे। उसे मन के स्तर पर ही शांत कर देना चाहिए।

तीन उत्तम जलः श्रुत, शील और तप–

कषाय रूपी इस भयंकर अग्नि को बुझाने के लिए पूज्य प्रवर ने ३ अचूक 'शीतल जल' बताए।

> क्रोध की अग्नि में जलने से बेहतर है, स्वाध्याय और मधुर वाणी के शीतल जल से आत्मा को शांत रखना।
> –आचार्यश्री महाश्रमण

१. श्रुत (ज्ञान व स्वाध्याय): आगम की वाणी का निरंतर स्वाध्याय, चिंतन और अनुप्रेक्षा करने से कषाय शांत होते हैं। जितना ज्ञान व्यवहार में उतरेगा, कषाय की अग्नि उतनी ही मंद होगी।

२. शील (शालीन व्यवहार व चारित्र): हमारा व्यवहार शांतिपूर्ण और मधुर होना चाहिए। यदि सामने वाला व्यक्ति गुस्सा करे, तो भी उस पर मधुर व्यवहार रूपी जल डालकर शांत करना चाहिए।

३. तप (तपस्या) : तपस्या भी आत्मा के भीतर भड़क रही कषाय की अग्नि को शांत करने के लिए उत्तम शीतल जल का कार्य करती है।

बूढ़ी महिला और चंद्रबाई का चूड़ा

आचार्य श्री ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के संस्मरण से एक कहानी साझा की। एक गांव में एक बूढ़ी महिला थी जिसने नया चूड़ा खरीदा था। वह चाहती थी कि गांव की अन्य महिलाएं आएं और उसके चूड़े की तारीफ करें, लेकिन कोई ध्यान नहीं दे रहा था। अंत में, अहंकार और प्रशंसा पाने की लालसा में, उसने अपनी ही झोपड़ी को आग लगा दी।

जैसे ही आग लगी, गांव के लोग उसे बुझाने के लिए दौड़े। उसी अफरा-तफरी के बीच, कुछ महिलाएं उसके पास आईं और देखा कि उसने नया चूड़ा पहना है। उन्होंने पूछा, "मासा, यह चूड़ा कब पहना?" उस बूढ़ी महिला ने उत्तर दिया, "अब आई हो चूड़ा पूछने? अगर पहले आ जातीं तो मेरी झोपड़ी नहीं जलती।"

एक पंक्ति में सार

अहंकार और वाहवाही की भूख व्यक्ति का विवेक छीन लेती है, जिससे वह केवल दूसरों का ध्यान खींचने के लिए अपना ही सर्वस्व नष्ट कर बैठता है।

माना कि अंधकार है घना, पर दीपक जलाना कब है मना! : आचार्यश्री महाश्रमण

उत्तरज्झयणाणि आगम से उद्योत (प्रकाश) का मर्म समझाया—'तीर्थंकर प्रभु ज्ञान के वो सूर्य हैं जो अज्ञान रूपी अंधेरा हर लेते हैं

लाडनूं।
19 जुलाई, 2026

महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में निर्धारित विषय 'उद्योत कौन करेगा?' को उत्तरज्झयणाणि आगम के माध्यम से व्याख्यायित किया। पूज्य प्रवर ने फरमाया कि इस संसार में अज्ञान और निराशा का भयंकर अंधकार है, जिसे दूर करने के लिए मनुष्य को निरंतर ज्ञान और पुरुषार्थ का सहारा लेना चाहिए।

अज्ञान का भयंकर अंधकार और 'ज्ञान रूपी सूर्य' का उदय–

१. सर्वलोक के लिए चिंता का प्रश्न : आचार्यश्री ने आगम के हवाले से फरमाया कि दुनिया में अंधा बना देने वाला घोर अंधकार व्याप्त है। ऐसे में सवाल उठना स्वाभाविक है कि प्राणियों के लिए प्रकाश (उद्योत) कौन करेगा?

२. तीर्थंकर प्रभु हैं 'विमल भानु': इस प्रश्न का समाधान देते हुए पूज्य प्रवर ने फरमाया कि तीर्थंकर प्रभु स्वयं सर्वज्ञ हैं और वे ऐसे भास्कर (सूर्य) हैं जिनका संसार क्षीण हो चुका है। भगवान महावीर रूपी सूर्य की वाणी और उनके शब्द-पुद्गल लोगों का अज्ञान रूपी अंधकार दूर करते हैं।

३. ज्ञान बिना विवेक असंभव : अज्ञान ही जीवन का सबसे बड़ा दुख है। ज्ञान के बिना व्यक्ति को क्या करने योग्य है और क्या नहीं (करणीय-अकरणीय), इसका विवेक नहीं रहता। इसलिए साधु-साध्वियों और श्रावकों को शास्त्रों के अध्ययन व अपनी प्रज्ञा से निरंतर ज्ञान बढ़ाना चाहिए।

> निराशा और नकारात्मकता के आगे घुटने न टेकें, अपने भीतर सत्कर्म का उजाला जलाए रखें
> –आचार्यश्री महाश्रमण

ज्ञान का प्रज्वलित दीपक–

जीवन में व्याप्त निराशा, हिंसा और अज्ञानता के संदर्भ में पूज्य प्रवर ने बेहद मार्मिक पाथेय दिया।

१. सत्कर्मों का दीप जलाएं : आचार्यश्री ने फरमाया कि दुनिया में चाहे कितनी भी नकारात्मकता क्यों न हो, मनुष्य को निराश होकर बैठने के बजाय अपने पुरुषार्थ और सत्कर्मों का दीपक जलाए रखना चाहिए।

२. छोटे प्रयास, बड़ा उजाला : हमारे छोटे-छोटे सकारात्मक प्रयास भी इस घने अंधकार को दूर करने में बहुत सहायक सिद्ध होते हैं।

३. अणुव्रत का अमर संदेश : आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन, प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान का जो दीप जलाया, उसने समाज से अनैतिकता और असंयम का अंधेरा दूर करने का महान कार्य किया है।

टी.पी.एफ. मेधावी विद्यार्थी सम्मान व अन्य आयोजन–

टी.पी.एफ. का कार्यक्रमः तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (TPF) द्वारा आयोजित मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह के संदर्भ में TPF के राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत ने अपने विचार व्यक्त किए।

'श्री उत्सव एक कदम स्वावलंबन की ओर' कार्यशाला का आयोजन

उत्तर दिल्ली।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल उत्तर दिल्ली द्वारा आयोजित 'श्री उत्सव – एक कदम स्वावलंबन की ओर 'का भव्य आयोजन पीतमपुरा में अत्यंत उत्साहपूर्ण, सुव्यवस्थित एवं अखिल भारतीय के निर्देशानुसार एवं उल्लास पूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम का शुभ उद्घाटन मुख्य अतिथि अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की राष्ट्रीय अध्यक्ष सुमन नाहटा, दिल्ली मेयर माननीय प्रवेश वाही द्वारा रिबन खोलकर किया गया। मुख्य अतिथि, विशेष अतिथि का द्वार पर तिलक व पटके के साथ स्वागत कन्या मंडल की कन्याओं द्वारा किया गया। कार्यक्रम में विशेष अतिथि DDMA उपाध्यक्ष रितु गोयल, विश्व मांगल्य सभा व विश्व हिंदू परिषद दिल्ली प्रांत की उपाध्यक्ष ज्योति शर्मा, साध्वी ऋतंभरा की शिष्या साध्वी समाहिता व दिल्ली सभा के अध्यक्ष विमल बैंगानी आदि उपस्थित रहे। उद्घाटन के पश्चात ABTMM से तत्वज्ञान, तेरापंथ-दर्शन की संयोजिका कुसुम बैंगानी ने नमस्कार महामंत्र के साथ मंचीय कार्यक्रम का आगाज किया, मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत के द्वारा कार्यक्रम में एक नया जोश, नई ऊर्जा का संचार किया। राष्ट्रीय अध्यक्षा सुमन नाहटा ने अपने वक्तव्य में मंडल के आयोजन की सराहना की एवं लिखित संदेश में कहा की 'उत्तर दिल्ली महिला

मंडल का श्री उत्सव का आयोजन बहुत ही सुंदर, व्यवस्थित और उद्देश्य की पूर्ति करने वाला है मैं अध्यक्ष, मंत्री पर समस्त टीम को केंद्र के अनुरूप आयोजित करने हेतु धन्यवाद व मंगल कामना देती हूं आपका हर कार्य सराहनीय होता है आप पर अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल को गर्व है।

रितु गोयल व ज्योति शर्मा ने भी आयोजन की दिल से प्रशंसा करते हुए तेरापंथ महिला मंडल की सराहना की। श्री उत्सव का उद्देश्य महिलाओं को आत्मनिर्भरता व स्वावलंबन की दिशा में प्रोत्साहित करना, उनके कौशल को पहचान दिलाना तथा महिला उद्यमियों को अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित कर एक सशक्त मंच प्रदान करना था। प्रदर्शनी में लगाए गए 51 विभिन्न आकर्षक स्टॉलों अखिल भारतीय द्वारा निर्देशित राजस्थानी थीम को आधार बनाकर चुनरी व कठपुतलियों से बैंक्विट हॉल को सजाया गया। बहनों ने मंडल लोगो की मेंहदी लगवाई। मंच का संचालन मंत्री प्रवीणा सिंघी ने किया। कार्यक्रम संयोजिका रेखा जैन निशा पारख व समस्त कार्य समिति बहनों के अथक परिश्रम, स्नेह और सहयोग की भावना से श्री उत्सव का आयोजन अत्यंत ही सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

युद्ध, अहिंसा और अणुव्रत पर व्याख्यान में शांति एवं नैतिक जीवन का संदेश

अहमदाबाद।

इन्स्टीट्यूट ऑफ जैनोलॉजी, अहमदाबाद, अणुव्रत लेखक मंच (प्रकल्प : अणुव्रत विश्व भारती) एवं अणुव्रत समिति, अहमदाबाद के संयुक्त तत्वावधान में गुजरात विश्व कोष भवन, अहमदाबाद में 'युद्ध, अहिंसा और अणुव्रत' विषय पर आचार्य महाश्रमण के प्रबुद्ध सुशिष्या साध्वी अणिमाश्री जी_ के सानिध्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में पद्मश्री डॉ. कुमारपालभाई देसाई उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में साध्वी अणिमाश्री जी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं, बल्कि विनाश का मार्ग है। भगवान महावीर के अहिंसा, करुणा एवं आत्मसंयम के संदेश को अपनाकर ही विश्व में स्थायी शांति स्थापित की जा सकती है। उन्होंने अणुव्रत आंदोलन को व्यक्ति निर्माण से समाज निर्माण की प्रभावी पहल बताया।आज के युद्ध के माहौल में अहिंसात्मक जीवनशैली जीने के लिए अणुव्रत ही सटीक मार्ग है। यदि व्यक्ति अणुव्रतों का पालन करे और संयम को प्रधानता दे तो बंधुत्व का भाव स्वयं मुखर होगा।

विशिष्ट वक्ता पद्मश्री डॉ. कुमारपाल देसाई ने कहा कि अणुव्रत केवल एक विचार नहीं, बल्कि जीवन जीने की वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक पद्धति है। उन्होंने नैतिक मूल्यों, मानवीय संवेदनाओं तथा आत्मानुशासन को आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता बताते हुए युवाओं को अणुव्रत के सिद्धांतों से जुड़ने का आह्वान किया।

आचार्य श्री तुलसी आचार्य महाप्रज्ञजी के साहित्य व अणुव्रत से वर्तमान युद्ध व हिंसा जैसी समस्याओं का समाधान प्राप्त होता है। कार्यक्रम में अणुव्रत लेखक मंच के राष्ट्रीय संयोजक जिनेंद्र कुमार कोठारी की विशेष उपस्थिति रही। उन्होंने अणुव्रत साहित्य एवं वैचारिक गतिविधियों के माध्यम से समाज में नैतिक चेतना के प्रसार के लिए लेखक मंच की विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी। साध्वी डॉ. सुधाप्रभाजी ने अणुव्रत की पृष्ठभूमि बताते हुए कहा कि 'अणुव्रत इंसान को इंसान बनाने का आंदोलन है'।

नैतिकता और प्रामाणिकता के उदाहरण भी दिए। अणुव्रत समिति अहमदाबाद की अध्यक्षा डिम्पल श्रीमाल ने अतिथियों का स्वागत एवं अभिवादन किया। कार्यक्रम का प्रभावी संचालन संतोष कुमार सुराणा ने किया। आभार ज्ञापन मंत्री मनीषा दक ने किया।

प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

चेन्नई।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा निर्देशित तथा श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा चेन्नई द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यशाला में उपस्थिति प्रतिनिधियों को उद्बोधन प्रदान करते हुए डॉ. मुनि पुलकितकुमार जी ने कहा- जैन धर्म का नवीनतम संस्करण है तेरापंथ धर्मसंघ। हमारा सौभाग्य है कि हमें अनुशासित तेरापंथ संघ मिला है। अनुशासन और मर्यादा तेरापंथ की शान और पहचान है। इसमें साधु और साध्वियां ही नहीं श्रावक और श्राविकाएं भी संघ एवं गुरु आज्ञा के प्रति निष्ठापूर्वक समर्पित रहते हैं। मुनि श्री ने कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण के सूत्र प्रदान करते हुए देते कहा कि कार्यकर्ताओं में एक दूसरे के प्रति सम्मान का भाव होना चाहिए जैसे चाबी के गुच्छे में हर चाबी का अपना विशेष महत्व होता है वैसे ही हर कार्यकर्ता में अपनी विशेषताएं होती है, ईर्ष्या वृत्ति से बचें। मुनिश्री ने आगे कहा-तेरापंथ की विशेषता है कि यहां एक गुरु और एक विधान है। नचिकेता मुनि आदित्य कुमार ने मधुर-प्रेरणादायक गीत के माध्यम से प्रेरणा दी। अनेक सत्र में विभाजित व संचालित कार्यशाला में महासभा अध्यक्ष महेंद्र नाहटा, निवर्तमान अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया, उपाध्यक्ष प्रकाश लोढ़ा आदि ने महासभा की विविध प्रवृत्तियों पर सम्पूर्ण जानकारी के साथ सभा संचालन व के प्रत्येक पहलू पर उपयोगी प्रशिक्षण प्रदान किया।स्वागत वक्तव्य चेन्नई सभाध्यक्ष महेंद्र मांडोत ने प्रस्तुत किया। धन्यवाद ज्ञापन कार्यशाला संयोजक महेंद्र आंचलिया व मनोज गादिया एवं संचालन मंत्री चन्द्रेश चिप्पड़ ने किया।

साउंड हीलिंग कार्यक्रम का हुआ आयोजन

बेंगलुरु।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी पावनप्रभा जी ठाणा ४ के सानिध्य में शांतिनगर में तेरापंथ सभा गाँधीनगर में साउंड हीलिंग सेशन कार्यक्रम का आयोजन हुआ।इसमें मुख्य प्रशिक्षक मिथुन बाफना एवं प्रीति बाफना ने बहुत ही सुंदर व व्यवस्थित विविध प्रकार के ध्वनि यंत्रो से शांत वातावरण का निर्माण किया एवं उपस्थित श्रावकों को गहरी शांति की अनुभूति करवाई। आध्यात्मिकता और शांति के संदेश को लेकर भव्य आध्यात्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। साध्वी पावनप्रभा जी ने अपने प्रवचन में कहा कि आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में मन की शांति सबसे बड़ी जरूरत है। उन्होंने कहा, _'क्रोध, तनाव और नकारात्मक विचार ही सभी रोगों की जड़ हैं। यदि हम प्रतिदिन 15 मिनट ध्यान के साथ हिलीग व सकारात्मक सोच को जीवन में उतार लें तो जीवन अपने आप सरल हो जाएगा। शांति नगर स्थित कार्यक्रम स्थल पर प्रातः भव्य रेली के साथ श्रद्धालु स्वागत के लिए उपस्थित हुए। साध्वी उन्नतयशा जी, साध्वी आत्मयशा जी, साध्वी रम्यप्रभा जी ने श्रावकों को चातुर्मास में त्याग तपस्या से जुड़ने का आह्वान किया। कार्यक्रम का संचालन जितेंद्र घोषल ने किया ।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

टोहाना।

प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देश अनुसार तथा प्रेक्षा वाहिनी टोहाना के तत्वावधान में स्थानीय तेरापंथ भवन में तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा आरती जैन की अध्यक्षता में जुलाई मास की प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन किया।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा के निवर्तमान मंत्री सुभाष जैन ने कहा कि प्रेक्षाध्यान आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का मानवता को दिया गया एक उत्कृष्ट अवदान है जो आत्मा और शरीर दोनों को निर्मल, निरामय तथा पावन बनाता है। उन्होंने कहा कि प्रेक्षाध्यान से आत्मा निर्मल एवं निरामय बनती है तथा व्यक्ति मानसिक रोगों से भी मुक्ति पाता है। प्रेक्षाध्यान आत्मा के द्वारा आत्मा का अवलोकन है और इससे आधि व्याधि और उपाधि का क्षय होता है।

उन्होंने कहा कि प्रेक्षाध्यान से मनुष्य की जीवन शैली में कार्यक्रम में प्रेक्षावाहिनी संवाहिका उषा जैन ने सभी का आभार व्यक्त किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
27 जुलाई - 02 अगस्त 2026

संक्षिप्त खबर

श्री उत्सव 2026 महिला सशक्तिकरण, सेवा एवं सहयोग का भव्य आयोजन

साउथ हावड़ा। तेरापंथ महिला मंडल, साउथ हावड़ा द्वारा आयोजित 'श्री उत्सव 2026' अत्यंत भव्य, आकर्षक एवं सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ णमोकार महामंत्र के मंगल उच्चारण के साथ हुआ। उद्घाटन समारोह में अखिल भारतीय सचिव, सहकार भारती नंदनी रॉय, प्रवासी बंगाली (राजस्थान) राज्य प्रभारी भरत पुलासरिया,तथा MLA संजय सिंह के निजी असिस्टेंट सहित कोलकाता सभा के अध्यक्ष शिखरचंद लुणावत, तेरापंथ सभा, साउथ हावड़ा के अध्यक्ष प्रकाशचंद मालू की गरिमामयी उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन संयोजिका सरिता सामसुखा ने किया। कार्यक्रम की सफलता में सरिता सामसुखा, सुषमा बोथरा तथा महिला मंडल की सभी पदाधिकारियों, कार्यसमिति सदस्यों एवं सहयोगी बहनों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

निःशुल्क लिपिड प्रोफाइल, मधुमेह एवं रक्तचाप प्रशिक्षण शिविर

पूर्वांचल कोलकाता। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा निर्देशित आयाम सेवा - संस्कार - संगठन को पूर्ण साकार करते हुए तेरापंथ युवक परिषद् पूर्वांचल-कोलकाता ने सत्र 2026-27 के प्रथम सेवा कार्य के अंतर्गत आचार्य तुलसी डायग्नॉस्टिक सेंटर पूर्वांचल द्वारा तुलसी वाटिका लेक टाउन में 14 लोगों का निशुल्क लिपिड प्रोफाइल टेस्ट, 20 लोगों का निशुल्क मधुमेह परीक्षण एवम 20 लोगों का निशुल्क रक्तचाप परीक्षण किया गया। कार्यक्रम में उपस्थिति रही पूर्वांचल सभा के अध्यक्ष बिनोद दूगड़, मंत्री पंकज डोसी, तेयूप के सदस्यों, किशोर मंडल सदस्यों एवं महिला मंडल के सदस्यों की अच्छी उपस्थिति थी। सभी के अथक श्रम से शिविर सुव्यवस्थित और सफ़ल रहा।

रक्तदान शिविर का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद,पूर्वांचल-कोलकाता द्वारा आयोजित इस सत्र के प्रथम रक्तदान शिविर, कालीपदा बांगुड़ फ्रेंड्स क्लब, बांगुड़ एवेन्यू कोलकाता में किया गया। जिसमे कुल 54 यूनिट रक्त का दान प्राप्त हुआ। शिविर में आज अपनी सेवाएं दी परिषद के अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद पूर्वांचल कोलकाता के ATDC के सलाहकार रवि दुगड़, अध्यक्ष सिद्धार्थ दुधेड़िया, उपाध्यक्ष प्रथम आशीष लिंगा, मंत्री पारस नाहटा, सहमंत्री प्रथम लोकेश दूगड़, संगठन मंत्री विक्रम पटावरी, निवर्तमान अध्यक्ष राजीव बोथरा शिविर में उपस्थिति रही राजारहाट न्यू टाउन से नवनिर्वाचित MLA पीयूष कनोडिया की व शिविर की आयोजना में विशेष सहयोग प्राप्त हुआ कालीपदा बांगुड़ फ्रेंड्स क्लब के हेमंता घोष का।

18वां चित समाधि शिविर

लाडनूं। परम पूज्य युग प्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सानिध्य में संपन्न हुआ 18वां चित समाधि शिविर, लाडनूं। समण संस्कृति संकाय द्वारा आयोजित 18वां चित समाधि शिविर लाडनूं में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। सात दिवसीय इस शिविर में राजस्थान सहित विभिन्न स्थानों से आए 60 शिविरार्थियों ने चित समाधि का अभ्यास किया। इस अवसर पर अशोक पारेख, सलील लोढ़ा, मालचंद बेंगानी, पुखराज डागा, डॉ विजय संचेती, राजेश दुगड़ एवं प्रेमलता शिशोदिया विशेष रूप से उपस्थित रहे। शिविर के दौरान प्रतिदिन विभिन्न विषयों पर व्याख्यान आयोजित किए गए। सलील लोढ़ा ने जैन विश्व भारती के विषय पर, उपासक रणजीत चोरडिया ने जैनदर्शन तेरापंथ पर, शांताबाई ने '50 के बाद चित में कैसे रहें' विषय पर मार्गदर्शन दिया।

परिवार प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित

जसोल।

प्रोफेसर डॉ. साध्वीश्री मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में जसोल न्यू ओसवाल भवन में 'परिवार बने सुरक्षा कवच' विषयक परिवार प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित हुई। साध्वीश्री ने उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा - हम सभी समूह में रहने वाले और साधना करने वाले प्राणी हैं। जहां साथ रहते हैं वहां विचारभेद होना असंभव नहीं।

पारस्परिक सौहार्द, प्रेम संवर्धन के लिए व्यवहार को सौम्य बनाने की जरूरत होती है। परिवार इज्जत से चलता है आग्रह से नहीं। जिन्दगी में आने वाली परिस्थितियों और कठिनाइयों को आसान करने के लिए अपने नजरिए को बदलें या कुछ बातों को नजरंदाज करें।

पारिवारिक शांति के लिए सहनशीलता परमावश्यक तत्व है। एक छत के नीचे रहने वाले को सहन करें, समझदार वह होता है जो ईंट का जवाब पत्थर से नहीं देता बल्कि फेंकी गई ईंटों से आशियाना बनाए। अतीत में हुई कड़वाहट और दुःखप्रद घटना प्रसंग को भूलने और शुभ भविष्य के लिए कारगर संकल्प बद्धता आवश्यक है। बड़े - बुजुर्गों के प्रति सम्मान और छोटों के प्रति वात्सल्य भावों का प्रवाह बहता रहे, यदि किसी की खामी बताएं तो अकेले को और समूह में गुणानुवाद करें।

साध्वी डॉ राजुल प्रभा एवं चैतन्य प्रभा ने मंगला चरण प्रस्तुत किया। साध्वी वृन्द ने सामूहिक संगान किया। साध्वी डॉ -चैतन्यप्रभा जी ने 'परिवार' का विश्लेषण करते हुए कहा- परिवार प्रशिक्षण सम - सामयिक अपेक्षा है। स्वार्थवृत्ति और अहंकार वृति को कम करने का लक्ष्य रहे तो तनाव से बचा जा सकता है।

ये जानकारी तेरापंथ सभा संगठन मंत्री जयंतीलाल जीरावला ने दी। कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन साध्वी डॉ - शौर्य प्रभा जी ने किया।

8 दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का समापन

अहमदाबाद (कोबा)।

प्रेक्षा विश्व भारती कोबा द्वारा आयोजित आठ दिवसीय आवासीय प्रेक्षाध्यान शिविर का समापन आध्यात्मिक उल्लास एवं मंगलभावना के साथ सम्पन्न हुआ। समापन सत्र का शुभारंभ प्रेक्षा गीत एवं मंगलाचरण से किया गया।

स्वागत भाषण अध्यक्ष भैरुलाल चौपडा और ट्रस्टी व् मनोनीत अध्यक्ष गौतम बाफना ने किया पूर्व मानद मंत्री गजेन्द्र भंडारी ने कहा की प्रेक्षाध्यान हमारे जीवन की प्रयोगशाला बने। समापन अवसर पर प्रेक्षा विश्व भारती के एवं प्रशिक्षकों ने कहा कि प्रेक्षाध्यान केवल एक ध्यान-पद्धति नहीं, बल्कि जीवन जीने की वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक कला है। यदि व्यक्ति प्रेक्षा, अनुप्रेक्षा, भावक्रिया, प्रतिक्रिया-विरति, मैत्री, मिताहार एवं मितभाषण को अपने दैनिक जीवन में अपनाए, तो वह शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक संतुलन प्राप्त कर सकता है। शिविर के दौरान प्रतिभागियों ने योग, प्रेक्षाध्यान, कायोत्सर्ग, श्वास-प्रेक्षा, अनुप्रेक्षा तथा जीवन-विज्ञान के विभिन्न प्रयोगों का नियमित अभ्यास किया। प्रशिक्षक रेणु नाहटा, प्रशिक्षक जवेरीलाल संकलेचा, प्रशिक्षक संध्या रायसोनी ने सभी प्रतिभागियों से आग्रह किया कि शिविर में सीखे गए अभ्यासों को नियमित रूप से अपने जीवन की प्रयोगशाला बनाएं, जिससे स्वस्थ, संतुलित एवं आनंदमय जीवन की दिशा में निरंतर आगे बढ़ सकें। अंत में मंगलभावना का सामूहिक आयोजन किया गया तथा सभी शिविरार्थियों को उज्ज्वल, स्वस्थ एवं शांतिमय जीवन के लिए मंगलकामनाएँ दी गईं। आभार ज्ञापन एवं कुशल संयोजन जवेरीलाल संकलेचा ने किया। विशेष श्रम विमल घिया का रहा ।

सभा संचालन प्रशिक्षण कार्यशाला

साउथ हावड़ा।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में सभा संचालन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा किया गया।

कार्यशाला में महासभा के प्रधान न्यासी सुरेश गोयल, उपाध्यक्ष मांगीलाल बोथरा, कोषाध्यक्ष मदनचंद मरोठी, ट्रस्टी न्यासी नगराज बरमेचा, आंचलिक प्रभारी प्रकाश चंद मालू की गरिमामयी उपस्थिती रही। कार्यशाला में बृहत्तर कोलकाता व शेष बंगाल क्षेत्र से कुल 19 सभाओं के 136 पदाधिकारी व सदस्यों ने हिस्सा लिया। कार्यशाला के उद्घाटन एवं प्रेरणा सत्र में उद्बोधन प्रदान करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा- जिनशासन के चार अंग है- साधु-साध्वी, श्रावक, श्राविका, जिनशासन में साधु साध्वी का जितना महत्त्व है उतना ही श्रावक-श्राविका का महत्व है। दोनो एक दूसरे के पूरक है।

श्रावक अपनी साधना करता हुआ धर्म संघ के प्रति मेरा क्या कर्तव्य है जो इसके प्रति जागरूक रहे। तेरापंथ धर्म संघ एक अनुशासित धर्मसंघ है। इसकी प्रवर्धमानता के चार सूत्र है, अनुशासन, समर्पण, एक नेतृत्व व कषायों का अल्पीकरण।

प्रत्येक श्रावक धर्मसंघ की मर्यादा व अनुशासन में रहे। अनुशासन का लोप करने वाला सुख व शांति से वंचित रह जाता है। गुरु के प्रति समर्पण का भाव होना चाहिए।

आज्ञा में सतर्क ज्ञान में तर्क होना चाहिए। गुरु दृष्टि की आराधना करनी चाहिए। नियमों के प्रति सजग रहना चाहिए। आलोचना निन्दा से बचना चाहिए। कषाय जितने कम होंगे उतना ही व्यक्ति प्रभावशाली होगा। प्रशंसा प्रदर्शन से दूर रहना चाहिए। जैन संस्कारों के प्रति सजग रहना चाहिए। सात्विक जीवन जीना चाहिए' सधार्मिक वात्सल्य का भाव होना चाहिए। पदाधिकारी है उसको जैन धर्म व तेरापंथ धर्म संघ की सामान्य जानकारी होनी चाहिए। प्रकाश मालू ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया । आभार ज्ञापन साउथ हावड़ा सभा के सहमंत्री मनोज कोचर ने किया।

संक्षिप्त खबर

चिकित्सकों का जैन पताका व मोमेंटो से किया गया सम्मान

गंगाशहर। विश्व चिकित्सक दिवस के पावन अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद ट्रस्ट, गंगाशहर द्वारा आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेन्टर के अंतर्गत स्थानीय सेवाभावी चिकित्सकों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। तेयुप ट्रस्ट अध्यक्ष देवेन्द्र कुमार डागा ने कहा कि 'वैद्यो नारायणो हरिः' भारतीय संस्कृति में चिकित्सक को साक्षात् नारायण का रुप माना गया है। हर आपात स्थिति में चिकित्सकों ने जो त्याग और परिश्रम किया है, वह अविस्मरणीय है। मंत्री दिनेश कुमार सोनी ने बताया कि अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के नेतृत्व में तेयुप ट्रस्ट, गंगाशहर द्वारा संचालित _आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेन्टर, मेगा स्वास्थ्य जांच शिविर, रक्तदान शिविर, नेत्रदान जागरूकता_ जैसे सेवा कार्यों में चिकित्सकों का निरंतर सहयोग मिलता रहा है। तेरापंथ युवक परिषद ट्रस्ट द्वारा समस्त चिकित्सकों का सम्मानकिया गया।

प्रथम कार्यकारिणी बैठक व दायित्व का हस्तांतरण सम्पन्न

मैसूर। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मैसूर की नवगठित कार्यकारिणी (2026–28) की प्रथम बैठक आयोजित की गई। बैठक का शुभारंभ निवर्तमान अध्यक्ष प्रकाश दक एवं मंत्री दिलीप पीतलिया द्वारा नवनिर्वाचित अध्यक्ष मदनलाल मारु एवं मंत्री महावीर मारु को दायित्वों के औपचारिक हस्तांतरण के साथ हुआ। नवनिर्वाचित अध्यक्ष मदनलाल मारु ने सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों का स्वागत किया।बैठक का संचालन मंत्री महावीर मारु ने किया। बैठक में महासभा सदस्य विमल पितलिया एवं सभी सदस्य उपस्थित रहे। विनोद मुणोत ने सभी का आभार व्यक्त किया।

डॉक्टर्स डे पर चिकित्सकों का सम्मान

उधना। डॉक्टर्स डे के पावन अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद, उधना द्वारा ATDC में सेवा भावी चिकित्सकों का सम्मान कर उनके अमूल्य योगदान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की गई। कार्यक्रम में परिषद के पदाधिकारियों की सक्रिय एवं गरिमामयी उपस्थिति रही। मंत्री-कमलेश डांगी, सह मंत्री-पारस आंचलिया, कोषाध्यक्ष - संजय कच्छारा, संगठन मंत्री - स्मित चोरड़िया, ATDC प्रभारी-रौनक श्रीश्रीमाल, सभी पदाधिकारियों ने अपने भावों की अभिव्यक्ति से शुभकामनाएं प्रेषित की। इस अवसर पर सभी चिकित्सकों के सेवाभाव, समर्पण और मानवता के प्रति उनके अथक प्रयासों को नमन करते हुए उनका सम्मान किया गया। कार्यक्रम संचालन रौनक श्रीश्रीमाल ने किया। तेरापंथ युवक परिषद सदैव सेवा, संस्कार एवं संगठन के मूल्यों के साथ आगे बढ़ते हुए ऐसे सेवा कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाता रहेगा।

मंगल भावना कार्यक्रम सम्पन्न

भुवनेश्वर। युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि मोहजीत कुमारजी, मुनि भव्य कुमार जी एवं मुनि जयेश कुमार जी के प्रति मंगल भावना कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ भवन, भुवनेश्वर में श्रद्धा एवं भक्ति के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुआ। इस अवसर पर वरिष्ठ श्रावक प्रताप सिंघी तेरापंथ सभा के अध्यक्ष रंजीत बैद, तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री संतोष सेठिया, तेरापंथ युवक परिषद्, भुवनेश्वर के अध्यक्ष जितेंद्र बैद आदि ने मुनिश्री के प्रति मंगल भावनाएँ अर्पित कीं। मंगल उद्बोधन में मुनिश्री ने सभी की मंगल भावनाओं को स्वीकार करते हुए धर्म, साधना एवं सद्भावना का संदेश प्रदान किया तथा उपस्थित श्रावकों को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री वीरेंद्र बैताला ने किया। अंत में मंगलपाठ के उच्चारण एवं जयघोष के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नूतन प्रतिष्ठान

■ **उधना।** रौनक श्रीमाल, महावीर भाई शाह, सनी जैन, ओम प्रकाश पाठक, जय परमार, अमीश भाई, गहरीलाल, जयेश भाई एवं नीलेश भाई के नूतन प्रतिष्ठान 'डिवाइन इंटरनेशनल' का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक नेमीचंद कावड़िया एवं संजय बोथरा ने सम्पन्न करवाया।

■ **गांधीनगर दिल्ली।** राकेश पुगलिया व उनके सहयोगी प्रवीण फूलफगर व राजेंद्र हीरावत के नूतन प्रतिष्ठान (MS/-ALLORA) का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से उपासक संस्कारक मनीष छलाणी व हेमराज राखेचा ने सम्पूर्ण विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

नूतन गृह प्रवेश

■ **लिलुआ।** राजलदेसर निवासी अशोक– सुनीता देवी नाहर के विष्णु वाटिका, बेलूड़ स्थित गृह प्रवेश अनुष्ठान जैन संस्कार विधि से उपासक और संस्कारक अरुण नाहटा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द सम्पन्न करवाया।

पाणिग्रहण संस्कार

■ **गंगाशहर।** कमल चन्द - राखी डागा के सुपुत्र पीयूष का शुभ विवाह स्व. प्रदीप - नीलिमा मिन्नी कि सुपुत्री मेघा के साथ जैन संस्कार विधि से जैन संस्कारक पवन छाजेड़, विनीत बोथरा और देवेन्द्र डागा ने विवाह संस्कार का सारा मांगलिक आयोजन विधि विधान पूर्वक तथा मांगलिक मंत्रोचार के साथ सम्पन्न करवाया।

पर्यावरण विशुद्धि रैली एवं स्वागत समारोह

चेंबूर।

सुशिष्या साध्वी निर्वाणश्री ठाणा-६ का चेम्बूर चातुर्मास हेतु भव्य मंगल प्रवेश हुआ। विराट स्वागत सभा को संबोधित करते हुए विदुषी साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा-चातुर्मास का समय अध्यात्म की आराधना के लिए सीजन का समय है। बच्चों, युवकों, प्रौढ़ों, कन्याओं, युवतियों सभी में नए उत्साह का जागरण हो। आप सभी ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार आदि की आराधना के लिए स्वयं को संकल्पित करेंगे। अध्यात्म का आलोक आपके व्यक्तित्व में नई आभा प्रस्फुरित करेगा। प्रबुद्ध साध्वी डॉ.योगक्षेमप्रभाजी ने अपने प्रेरक संबोधन में कहा- आज के समारोह एवं रैली की भव्यता अध्यात्म के प्रति जनता के रुझान का दस्तावेज है। युवावर्ग को चार माह तक विशेष रूप से सक्रिय होना है। आज मैं आपको अध्यात्म की ABCD सीखाना चाहूंगी जिससे सबके जीवन में समन्वयात्मक सक्रियता, सौंदर्य में उज्ज्वलता शांति के साथ प्रयोगात्मकता का विकास होगा। साध्वीवृंद ने समवेत स्वरों में 'संघ दिवाकर की ये किरणें गीत की प्रस्तुति से सबका मन मोहा। कार्यक्रम से पूर्व एक विशाल रैली उपनगर के विभिन्न मार्गो से होती हुई सिग्नेचर बिजनेस पार्क के द्वितीय तल पर विशाल जन सभा में परिवर्तित हो गई। ल व्यक्त किए। तेरापंथ महिला मंडल की बहनों तथा चेम्बूर तेरापंथ सभा परिवार ने मधुरगीतों से साध्वीश्री का स्वागत किया। शासन सेवी विमल सोनी ने आचार्य प्रवर के मौखिक शुभसंदेश की प्रतिलिपि साध्वीश्री को उपहत की। कन्यामंडल ने एक पोस्टर भेंट किया। नगरसेविका आशा ताई ने अहो भावपूर्वक साध्वीश्री का स्वागत किया। मंच संचालन सभा के पूर्व अध्यक्ष रमेश धोका ने कुशलता से किया।आभार ज्ञापन सभा मंत्री दिलीप मेहता ने किया।

तेरापंथ-मेरापंथ कार्यशाला का आयोजन

नागपुर।

आचार्य श्री भिक्षु के जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा निर्देशित 'तेरापंथ मेरा पंथ' कार्यशाला का सफल आयोजन श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, नागपुर द्वारा अणुव्रत भवन में किया गया।

कार्यशाला प्रशिक्षक उपासक रतन सियाल मुंबई से पधारे। सभा अध्यक्ष संजय पुगलिया ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए सभी उपस्थित श्रावक - श्रविकाओं का हार्दिक अभिनन्दन किया कार्यशाला की उपयोगिता एंव उद्देश्य पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के अवसर पर आयोजित यह कार्यशाला तेरापंथ के सिद्धांतों एवं आदर्शों को गहराई से समझने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

उपासक रतन सिंयाल का प्रेरणादायी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। हम तेरापंथी है, लेकिन तेरापंथी है, तो आपका मकसद क्या है? आपका लक्ष्य क्या है? क्या आप ये चाहते हो की मैं हिंसा करता जाऊं और उसमें मैं धर्म मानता जाऊं? मैं अधर्म की क्रिया करता जाऊं और उसी में मैं धर्म भी मान लूँ नहीं हो सकता। हिंसा हिंसा ही है और अहिंसा अहिंसा ही है। चाहे आपने आवश्यक काम के लिए भी हिंसा की है तो भी वह हिंसा ही गिनी जाएगी। उन्होंने जैन तत्व दर्शन तथा दान-दया के दो पक्ष लौकिक और लोकोत्तर के बारे में विस्तृत प्रकाश डाला। शुद्ध साध्य की प्राप्ति के लिए शुद्ध साधन की आवश्यकता व प्रतिमा पूजा के संबंध में तेरापंथ के दृष्टिकोण को भी विस्तार से प्रस्तुत किया।

तत्पश्चात नागपुर उपासक आदित्य कोठारी ने अत्यंत सरल, तार्किक एवं प्रभावी शैली में जैन धर्म के मूल तत्वों, तेरापंथ धर्मसंघ की विशिष्टताओं,एंव आचार्य भिक्षु द्वारा प्रतिपादित लौकिक एवं लोकोत्तर धर्म के सिद्धांतों का विस्तृत विवेचन किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
27 जुलाई - 02 अगस्त 2026

साध्वी वृंद का चातुर्मासिक हुआ भव्य मंगल प्रवेश

विलेपार्ले, मुंबई।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की विदुषी शिष्या साध्वी राकेश कुमारी जी आदि साध्वीवृंद ठाणा-4 का विलेपार्ले स्थित गोयल जी के निवास पर भव्य मंगल प्रवेश हुआ। तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के अध्यक्ष मेघराज धाकड़, मुंबई सभा के अध्यक्ष सुरेंद्र कोठारी, पूर्व अध्यक्ष माणक धींग तथा भारत जैन महामंडल युवा इकाई के अध्यक्ष भूपेश कोठारी ने अपने विचार व्यक्त किए।

आयोजित समारोह का शुभारंभ साध्वी राकेश कुमारी जी के नवकार मंत्र से हुआ।तेयुप विलेपार्ले के अध्यक्ष महेंद्र वडाला एवं तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा कुसुम कोठारी ने स्वागत उद्बोधन दिया। टीपीएफ मुंबई वेस्टर्न जोन के अध्यक्ष प्रशांत परमार ने भी अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी मलय विभा जी, साध्वी विपुलयशा जी एवं साध्वी चेतस्वीप्रभाजी ने अष्टमंगल के आध्यात्मिक महत्व पर प्रेरक प्रस्तुति देते हुए त्याग एवं तप की भावना को जीवन में अपनाने का संदेश दिया। अपने प्रेरणास्पद उद्बोधन में साध्वी राकेश कुमारी जी ने कहा कि चातुर्मास आध्यात्मिक खेती का समय है। इस अवधि में आत्मा के विकास हेतु साधना, स्वाध्याय एवं धर्माराधना के माध्यम से आध्यात्म रूपी खेती का सिंचन करना चाहिए।

उन्होंने कहा कि विलेपार्ले में इस चातुर्मास के दौरान अध्यात्म की गंगा प्रवाहित होगी, जिसका लाभ लेकर प्रत्येक श्रावक-श्राविका अपने पाप, ताप एवं संताप को दूर कर सकता है। साध्वी श्री जी ने विलेपार्ले को एक छोटे से आध्यात्मिक टापू की संज्ञा देते हुए कहा कि यह क्षेत्र सेवा, जागरूकता एवं धर्मनिष्ठा के लिए सदैव अग्रणी रहा है। उन्होंने सभी कार्यकर्ताओं के समर्पण एवं सक्रियता की सराहना करते हुए विश्वास व्यक्त किया कि इस चातुर्मास का अधिकतम आध्यात्मिक लाभ सभी को प्राप्त होगा। साथ ही कार्यक्रम के अंत में मुकेश वडाला ने आभार ज्ञापित किया तथा कार्यक्रम का कुशल संचालन दीपक डागलिया ने किया।

भव्य रैली के साथ हुआ चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

कांदिवली।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की सुशिष्या 'शासनश्री' साध्वी विद्यावतीजी 'द्वितीय' व सहवर्तीनी साध्वीवृंद का कांदिवली तेरापंथ भवन में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हुआ। इस अवसर पर साध्वी विद्यावती जी ने अपने उद्बोधन में कहा- तेरापंथ धर्मसंघ श्रद्धाशील समाज है।ज्ञान,दर्शन,चारित्र से अपने आप को परीपुर्ण करें तथा त्याग और तपस्या की प्रेरणा दी। साध्वी प्रीयंवदा जी ने कहा- यह संग ही हमारी आन,बान और शान है तथा चातुर्मास संबंधित विशेष सुचनाएं दी। साध्वी प्रेरणाश्रीजी, साध्वी मृदुयशाजी एवं डा. साध्वी ऋद्धियशाजी ने सामुहिक गीतिका 'जागो जागो तुम्हें जगायें' के द्वारा श्रावक समाज से आह्वान किया की त्याग, तपस्या का मार्ग अपना कर चातुर्मास सफल बनाना है। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा मुंबई के अध्यक्ष सुरेन्द्र कोठारी ने कहा 'हमें इस चातुर्मास में भरपुर आध्यात्मिक लाभ लेना है और आत्म कल्याण करना है' तथा सभी पदाधिकारियों का स्वागत किया। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष महेंद्र नाहटा ने अपने वक्तव्य में कहा 'हम सौभाग्यशाली है कि हमें आचार्य श्री महाश्रमण जी जेसे गुरु मिले, मैं महासभा की ओर से आपका स्वागत करता हूं आप सभी इस चातुर्मास में आध्यात्मिक विकास करें। महासभा राष्ट्रीय महामंत्री विनोद बैद ने कहा 'साध्वी श्रीजी आपका ये चातुर्मास मंगलमय हो श्रावक समाज से आह्वान है की सभी इस चातुर्मास का पुरा लाभ लें।' कांदिवली सभा अध्यक्ष मिठालाल धाकड़ ने अपना वक्तव्य दिया। कार्यक्रम का सफल मंच संचालन तेयुप अध्यक्ष आशीष श्री श्रीमाल ने किया। सभी का आभार ज्ञापन तेयुप कांदिवली मंत्री विमल धाकड़ ने किया।

चातुर्मास में करें आध्यात्मिक विकास

कटिहार।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि प्रशांत कुमारजी मुनि कुमुद कुमारजी का कटिहार जैन भवन में अत्यन्त उत्साहपूर्ण वातावरण में भव्य चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हुआ। स्वागत समारोह को सम्बोधित करते हुए मुनि प्रशांत कुमारजी ने कहा- जीवन में मंगल का बड़ा महत्व होता है। जीवन में मंगल आचरण करने से जीवन मंगलमय बनता है। अपनी - अपनी क्षमता अनुसार संतो से कुछ ज्ञान ग्रहण करें और धार्मिक पुरुषार्थ करें तभी यह चातुर्मास आप सभी के लिए लाभदायी बन सकेगा।

धर्म के प्रति श्रद्धा उत्साह होना अपने आप में शुभ है। जहां त्याग की भावना होती है वहां विकास के रास्ते खुल जाते है। चातुर्मास में अपने स्वार्थ का त्याग करके संयम की भावना बढ़ाएं। अपनी सुविधाओं को छोड़कर अध्यात्म के साथ जुड़ना ही चातुर्मास की निष्पति है।आपस मे सभी मिलकर सौहार्द के साथ रहें जिससे समाज का विकास हो। साधु का द्वार सभी के लिए खुला है।

चारित्रात्मा सभी को कल्याणकारी बोध देते हैं लेने वाला अपनी - अपनी योग्यता से उसे ग्रहण करता है। अपने विचारों को खुला रखकर सम्यग ज्ञान को ग्रहण करना चाहिए। मुनि रमेश कुमार जी का सौहार्द भाव मिलता रहा है। मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा - संतो का आगमन सोई चेतना को जगाने वाला होता है।चातुर्मास केवल बड़े - बड़े आयोजनो से ही सफल नहीं होता ।संतों के चातुर्मास में तो तप - त्याग आदि आध्यात्मिक साधना चलनी चाहिए इसी से जीवन की सार्थकता फलीत होती है।ज्ञान,दर्शन,चरित्र और तप की आराधना चलती रहें। मासखमण ,अट्ठाई,तेले की साधना करें।चातुर्मास आत्मकल्याण में निमित्त बने अपने आचरण, व्यवहार, विचारों में परिवर्तन लाएं।तप ,त्याग,संवर ,सामायिक ,पौषध, ध्यान,जप कुछ न कुछ प्रयोग अवश्य करें। पच्चीस बोल,भक्तामर, श्रावक सम्बोध,प्रतिक्रमण इत्यादि को सीखने का मनोभाव रखें।

हनुमान नाहटा ने बताया - कार्यक्रम का शुभारम्भ महिला मण्डल के मंगलाचरण से हुआ।सभा अध्यक्ष विमल बैंगाणी ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष मनीष नाहटा, महिला मंडल उपाध्यक्ष सुषमा पटावरी ने वक्तव्य दिया।कार्यक्रम का कुशल संयोजन नेपाल बिहार अध्यक्ष विरेंद्र संचेती ने किया। आभार सभा मंत्री राजकुमार पुगलिया ने किया।

'तेरापंथ-मेरापंथ' कार्यशाला का आयोजन

टोहाना।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के निर्देशानुसार परम आराध्य आचार्य भिक्षु को ज्ञानात्मक श्रद्धांजलि अर्पित करने के उद्देश्य से श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के तत्वावधान में 'तेरापंथ मेरा पंथ' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में प्रशिक्षिका के रूप में पंचकूला से समागत उपासिका बहन सुश्री सुरजीत सिंगला ने आचार्य भिक्षु के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए श्रावक समाज को उनके जीवन, सिद्धांतों तथा धर्म क्रांति से जुड़े अनेक ज्ञानवर्धक प्रसंगों एवं दृष्टांतों से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि कोई भी महान कार्य केवल उपादान से नहीं, बल्कि नियति एवं योग्य निमित्त के संयोग से पूर्ण होता है। सत्य क्रांति के लिए आचार्य भिक्षु में जो अदम्य साहस था, उसी का परिणाम है कि तेरापंथ धर्मसंघ का सूर्य उदित हुआ। अस्तित्व उसी का बना रहता है, जो तूफानों एवं विपरीत परिस्थितियों में भी झुकने के बजाय सीना तानकर उनका सामना करता है। उन्होंने कहा कि आचार्य भिक्षु ने सत्य क्रांति एवं मर्यादा पालन के लिए अनेक कष्ट सहे, जिन्हें सुनकर आज भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं। तेरापंथ धर्मसंघ के विकास में मुनि थिरपालजी एवं फतेहचंदजी निमित्त बने तथा आचार, विचार, ज्ञान, दर्शन, चरित्र और तप की क्रांति को आगे बढ़ाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। उपासिका बहन सुश्री सुरजीत सिंगला ने कहा कि आचार्य भिक्षु ने अनासक्त भाव से जीवन जिया। उन्हें न अपने प्राणों का मोह था और न ही अपने शिष्यों के प्रति आसक्ति। उनका वास्तविक अनुराग केवल सत्य और अहिंसा के मार्ग से था। उन्होंने बताया कि आचार्य भिक्षु का उद्देश्य कोई नया धार्मिक संप्रदाय स्थापित करना नहीं था, बल्कि प्रकृति की विलक्षण व्यवस्था के अनुसार सहज रूप से तेरापंथ धर्मसंघ का निर्माण हुआ। इस धर्म क्रांति के मूल में आचार शिथिलता से लेकर गृह-प्रभाव तक अनेक दृश्य एवं अदृश्य कारणों का योगदान रहा, किंतु इसकी सफलता तभी संभव हुई, जब सत्यनिष्ठ, धर्मपरायण एवं महत्तम व्यक्तित्व के धनी आचार्य भिक्षु जैसा नेतृत्व प्राप्त हुआ।

मंगल भावना समारोह आयोजित

रोहिणी, दिल्ली।

महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या 'शासनश्री' साध्वी सुमन श्री जी के सान्निध्य में मुमुक्षु सुमन बैद का मंगल भावना समारोह मनाया गया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ तेरापंथ महिला मण्डल उत्तर दिल्ली की मंत्री प्रवीणा सिंघी के मंगल गीत से हुआ । शासनश्री साध्वी सुमन श्री जी ने प्रेरक उद्बोधन के दौरान कहा कि भवसागर को पार करने के लिए हमें संयम की नौका का सहारा लेना होगा।

इस नौका को पार पंहुचाने वाले हमें कुशल नाविक गुरु मिले है राम और केवट का मार्मिक प्रसंग सुनाते हुए साध्वी श्रीजी ने बताया कि ऐसे युग में विलक्षण धर्मसंघ और महाश्रमण जी जैसे महातेजस्वी गुरु की अनुशासना मंगल सन्निधि मिलना हमारा परम सौभाग्य है।

मुमुक्षु सुमन गुरु चरणों में जाकर समर्पित होकर (दीक्षित होकर) अपनी संयम साधना में सदा आगे बढ़ती रहे यही मंगल कामना है। रोहिणी सभा के अध्यक्ष संजीव जैन ने स्वागत भाषण देते हुए मुमुक्षु सुमन बैद के प्रति मंगल कामना करते हुए अपने विचारो की प्रस्तुति दी। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा रोहिणी के अध्यक्ष संजीव जैन, इस मंगल भावना कार्यक्रम में दिल्ली के वरिष्ठ श्रावक श्राविकाओं की उपस्थिति सराहनीय रही।

सेक्टर-3, रोहिणी में पहली बार मुमुक्ष का मंगलभावना समारोह मनाया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन श्यामसुंदर जैन ने किया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का 107 वां जन्मदिवस पर विशेष

गुलाब बाग

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के 107 वें जन्मदिवस के आयोजन को संबोधित करते हुए मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा- स्वयं की साधना, गुरु के प्रति अदभुत समर्पण से शून्य से शिखर तक पहुंच गए महात्मा महाप्रज्ञ जी। गुरु निष्ठा एवं आत्मनिष्ठा से उनकी प्रज्ञा जागृत हुई।आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी एक महान अध्यात्म योगी संत थे। उनकी योग साधना अत्यंत गहन थी। स्वयं प्रयोगधर्मा पुरुष थे।आगम आधारित योग साधना के सूत्र को गहराई से आत्मसात कर स्वयं ने प्रयोग करके साधु साध्वी को प्रयोग करवाएं। प्रेक्षाध्यान पद्धति का अविष्कार किया। प्रेक्षाध्यान को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया। ध्यान के विविध प्रयोग जनता के सामने प्रस्तुत किये। राजनीतिज्ञ, प्रशासनिक सामाजिक सभी स्तर के व्यक्तियों ने उनसे बहुत कुछ प्राप्त किया।उनका चिंतन हमेशा सकारात्मक रहा। मुनि कुमुदकुमार जी ने कहा- खुले आकाश में जन्म लेने वाले बालक नत्थु ने खुले आकाश जैसी ही विराटता को प्राप्त किया।विनय और गुरु के प्रति समर्पण के तो वे मूर्तिमान स्वरूप थे। तेरापंथ सभा अध्यक्ष मनोज पुगलिया, नेपाल बिहार सभा अध्यक्ष विरेंद्र संचेती,अभातेयुप कोषाध्यक्ष विकास बोथरा,तेरापंथ महिला मंडल से बबिता गिरिया,ने गीत एवं व्यक्तव्य के द्वारा अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि कुमुद कुमार जी ने किया। आभार सभा मंत्री सुनील भंसाली ने किया।

बेंगलुरु

तेरापंथ धर्मसंघ के दशम अधिशास्ता, शताब्दी पुरुष आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के 107वें जन्म दिवस के अवसर पर तेरापंथ सभा, विजय नगर, बेंगलुरु के तत्वावधान में राज भवन, बेंगलुरु, शांतिदूत युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि विनीतकुमार जी, मुनि पुनीतकुमार जी का पर्दापण हुआ। कर्नाटक के राज्यपाल महामहिम श्री थावरचंद गहलोत ने कहा कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने अणुव्रत आंदोलन, प्रेक्षा ध्यान और साहित्य जीवन विज्ञान के माध्यम से समाज को नई दिशा दी। वे मानव के मसीहा थे। इस अवसर पर मुनी विनीत कुमार जी ने कहा आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व, नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया। पर विशेष जानकारी दी। मुनि पुनीतकुमार जी ने कहा 'महाप्रज्ञः युगदृष्टा और युगनिर्माता' आचार्यश्री का जीवन त्याग, तप और साधना का अनुपम उदाहरण है। सभा अध्यक्ष भंवरलाल मांडोत ने महामहिम महोदय राज्यपाल को मुनिश्री का विजयनगर सभा में चातुर्मास प्रवेश पर मुख्य अतिथि के रूप में निवेदन किया कार्यक्रम में तेरापंथ सभा विजय नगर के पदाधिकारी उपस्थित थे। सभा अध्यक्ष भंवरलाल मांडोत, उपाध्यक्ष दिनेश हिंगड़, मंत्री मनोज सेठिया की उपस्थिति रही।

कटक

युगप्रधान आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का 107 वां जन्मोत्सव प्रज्ञा दिवस के रूप में मुनि मोहजीतकुमार जी के सान्निध्य में मनाया गया। इस अवसर पर मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा आचार्य महाप्रज्ञ वैश्विक संत परम्परा के कीर्तिधर आचार्य थे। उनका जन्म उदार विचारों, नई सोच, नई दृष्टि, करुणा, सद्‌भावना, साधना, समाधि का जन्म था। आचार्य महाप्रज्ञ ने दर्शन जगत् के साथ व्यवहार जगत को भी ऊंचाई दी। उन्होंने जन जन को प्रशस्त जीवन जीने का युग बोध दिया। मुनिश्री ने आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा सम सामयिक प्रबोध प्रदान करने वाले संस्मरणों को प्रकट किया। मुनि भव्यकुमारजी ने अपने दीक्षा गुरु 'आचार्य महाप्रज्ञ जी के व्यक्तित्व की अनेक विशेषताओं को स्वानुभूत प्रसंगों के माध्यम से प्रकट किया। मुनि जयेश कुमार जी ने अपने आदर्श आचार्य महाप्रज्ञ जी को अपनी विनयांजलि समर्पित करते हुए कहा कि महाप्रज्ञ का जीवन समर्पण, सतताभ्यास,सामंजस्य सर्वधर्मसद्भाव के गुणों का समवाय है। उनका व्यक्तित्व आज की पीढ़ी के लिये प्रेरणास्रोत बना हुआ है।

जयपुर

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का विश्व शांति संदेश वर्तमान विषम स्थितियों में अधिक प्रासंगिक हो गया है। महाप्रज्ञ ने मिसाइल मैन डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम से कहा था आज दुनियां को हिंसा और अशांति की नहीं, शांति और अहिंसा की मिसाइल की जरूरत है। ये विचार आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि तत्त्व रुचि 'तरुण' ने आचार्य महाप्रज्ञ जी के 107 वें जन्मोत्सव कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किये। मुनिश्री जी ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी द्वारा सुझाये सफलता के पांच सूत्रों की चर्चा करते हुए कहा- सहनशीलता, विनम्रता, सेवा, श्रमशीलता और संयम जीवन में सफलता दिलाने वाले महत्त्वपूर्ण सूत्र हैं। इस अवसर पर मुनि संभव कुमार जी ने कहा - आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी करुणाशील महापुरुष थे। उन्होंने बताया कि महाप्रज्ञ में विद्वता के साथ विनम्रता का अद्भुत संयोग था। सर्वधर्म सद्भावना कार्यक्रम में तेरापंथ सभा के मंत्री राजकुमार बाफना ने समागत अतिथियों का स्वागत तथा मंदिर कमेटी के सहयोग के प्रति आभार ज्ञापन किया।

रोहिणी, दिल्ली

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या शासन श्री साध्वी सुमनश्री जी के सानिध्य में प्रेक्षाप्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञजी का 107 वां जन्म दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ महावीर अष्टकम् से हुआ। शासन श्री साध्वी सुमनश्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा-आचार्य महाप्रज्ञ जी का जीवन दर्शन एक व्यक्ति नहीं विचार है, सागर नहीं महासागर है। उन्होंने मानवजाति के लिए ऐसे दो बड़े अवदान दिये है जिसमें जीवन भी अनेक समस्याओं का समाधान समाहित है। प्रेक्षा ध्यान और जीवन विज्ञान के प्रशिक्षण और प्रयोगों से जीवन में अवश्य बदलाव आता है। आचार्य महाप्रज्ञजी महान् साहित्यकार चिंतक दार्शनिक ही नहीं महान् योगी महावीर वाणी के भाष्यकार थे। साहित्यकारों की विद्वानों की दृष्टि में आधुनिक युग के विवेकानन्द थे। साहित्य सृजन से जैनधर्म का जन धर्म बनाया और भगवान महावीर के सिद्धान्तों को सुदूर देशों तक पहुँचाया। वो वीतराग तुल्य थे और बचपन से ही प्रज्ञा सम्पन थे। साध्वी मधुर लता ने 'गुरुवर हमारे जैन जगत के सितारे' मधुर संगीत से तावरण को भावविभोर बना दिया। मंगल पाठ से कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

साउथ हावड़ा

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में युगप्रधान आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का 107 वाँ जन्म दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजेन्द्र राठौड़ (पूर्व प्रतिपक्ष नेता राजस्थान विधानसभा) थे। महासभा के प्रधान न्यासी सुरेश गोयल, उपाध्यक्ष मांगीलाल बोथरा, कोषाध्यक्ष मदन मरोठी ,ट्रस्टी नगराज बरमेचा आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा- आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी जिनशासन के ज्योतिर्धर पुरुष थे। उनका जीवन बहुआयामी था। वे प्रवचनकार, साहित्यकार कवि, लेखक थे। वे आगमवेत्ता, विधिवेत्ता, तत्व वेत्ता के सूर्यन हीं महासूर्य थे। वे तेरापंथ धर्मसंघ के वैडुयर्व आचार्यश्री तुलसी के सक्षम पट्टधर थे। उनका जन्म राजस्थान के टमकोर कस्बे में हुआ। छोटी आयु में संन्यास लेकर सर्वतोमुखी विकास किया। प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान का आयाम देकर तनावग्रस्त लोगों को संजीवनी दी। शिक्षा जगत को नया आयाम देकर विद्यार्थियों को जीवन जीने की कला सिखाई । मुनि श्री ने आगे कहा- आचार्य महाप्रज्ञ जी का जन्म खुले आकाश में हुआ। उनका चिन्तन भी खुले आकाश की तरह व्यापक था। वे प्रज्ञा पुरुषथे। जैन न्याय के राधाकृष्णन थे, दूसरे विवेकानंद थे। उनकी विनम्रता संकल्पबल, समर्पण कृतज्ञता अपने आप में विशिष्ठ थी। उस महापुरुष का जन्म दिवस मनाना अपने आप में गौरव की बात है । महापुरुष के द्वारा बताए गये मार्ग पर चले तो जन्म दिवस मनाना और अधिक सार्थक होगा। इस अवसर पर मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल, साउथ हावड़ा के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष प्रकाश मालू ने दिया। आभार ज्ञापन साउथ हावडा सभा के मंत्री वसंत पटावरी ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंदजी ने किया। अतिथियों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर सांवरमल धनानिया आदि गणमान्य लोग उपस्थित थे।

राजाजीनगर

तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेन्टर श्रीरामपुरम के अंतर्गत तेरापंथ धर्मसंघ के दशम अधिशासस्ता प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के 107वे जन्म दिवस के उपलक्ष में रियायती शुल्क पर लिपिड प्रोफाइल जिसमें सात विभिन्न प्रकार के कोलेस्ट्रॉल की जांच कि गई । शिविर की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र से हुई, लगभग दो घण्टे तक चले शिविर में 43 सदस्य लाभान्वित हुए।

गुवाहाटी

आचार्य श्री महाश्रमण जी के विद्वान सुशिष्य मुनि आनंदकुमार जी 'कालू' एवं सहवर्ती मुनि विकास कुमार जी के सान्निध्य तथा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गुवाहाटी द्वारा सभी संघीय संस्थाओं के सहयोग से भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर उपस्थित जनमेदिनी को संबोधित करते हुए मुनि आनंद कुमार जी ने कहा - आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी एक महान अध्यात्म योगी संत थे। उनकी अन्तःप्रज्ञा जागृत थी। बड़े - बड़े धर्मगुरु उनके पास मार्गदर्शन के लिए आते थे। इस अवसर पर मुनि विकास कुमार जी ने सुमधुर गीतिका के माध्यम से तेरापंथ धर्मसंघ के दशमाचार्य महाप्रज्ञ जी को अपनी भावांजलि दी। मुनिश्रीजी द्वारा नमस्कार महामंत्र से प्रारंभ कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य तेरापंथी सभा के अध्यक्ष रितेश खटेड़ ने दिया। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने मंगलाचरण एवं महिला मंडल की सदस्याओं ने गीतिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा के उपाध्यक्ष अशोक सेठिया किया। धन्यवाद ज्ञापन रंजीत बोथरा ने किया।

विलेपार्ले

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का 107वां जन्म दिवस अत्यंत श्रद्धा, भक्ति और हर्षोल्लास के साथ 'प्रज्ञा दिवस' के रूप में मनाया गया। यह भव्य एवं मांगलिक कार्यक्रम साध्वी राकेश कुमारी जी आदि ठाणा-4 के पावन सानिध्य में गरिमापूर्ण ढंग से संपन्न हुआ। इसके पश्चात वरिष्ठ उपासक गंभीरमल ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के जीवन-वृत्त, उनके दर्शन और समाज के प्रति उनके महान अवदानों पर विस्तृत प्रकाश डाला। कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए साध्वी मलयविभाजी ने आचार्य प्रवर के जीवन से जुड़े कई प्रेरक और रोचक प्रसंग साझा किए, 'नथमल' से 'महाप्रज्ञ' बनने की ऐतिहासिक यात्रा का मुख्य प्रवचन में पूज्य साध्वी राकेश कुमारी जी ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की प्रज्ञा, ध्यान साधना और अद्भुत अध्यात्म यात्रा को रेखांकित किया। सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, 'पूज्य गुरुदेव वास्तव में प्रज्ञा के अक्षय धनी थे। उन्होंने अपने महान गुरुओं— आचार्य श्री कालूगणी जी एवं आचार्य श्री तुलसी जी के सानिध्य में रहकर अपने जीवन को विकास के सर्वोच्च शिखरों तक पहुँचाया।'साध्वी जी ने आगे कहा कि गुरुकृपा, समर्पण, विनम्रता, सरलता और अनवरत योग साधना के बल पर ही एक साधारण बालक 'नत्थू' (नथमल) से जैन शासन के महान 'महाप्रज्ञ' बनने की ऐतिहासिक यात्रा संभव हो सकी। उनका जीवन हर साधक के लिए एक जीवंत मार्गदर्शिका है।

संबोधि

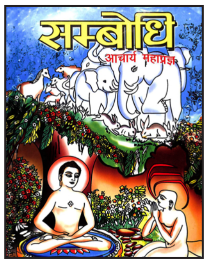

परिशिष्ट

– आचार्यश्री महाप्रज्ञ

विमला ठक्कर ने मौन में तथ्य के साक्षात्कार की बात कही है। 'मौन चित्त की निष्कंपन की अवस्था है, जिसमें विचार और भावना की तरंग नहीं है। विचार, भावना, अहंकार में सारी की सारी ऊर्जा जो बिखर गई थी वह सिमट कर अपने आप में इकटठी हो जाती है। वह फिर देखती है। उसका देखना द्रष्टा और दृश्य—दोनों को मिटा देता है। तथ्य का साक्षात्कार होना तथ्याकार हो जाना है।'

बौद्ध ध्यान परम्परा के महान् आचार्य बोधिधर्म ने सत्य में प्रवेश के दो द्वारों का प्रयोग प्रस्तुत किया है—ज्ञान और कर्म।

ज्ञान—

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि सब प्राणियों में एक ही सत्य निहित है। वे सदैव बाह्य विषयों से अवरुद्ध रहते हैं, इसलिए मैं उनसे असत्य को त्यागकर सत्य के ग्रहण करने का आग्रह करता हूं। दीवार को देखते हुए उन्हें अपने चित्त की वृत्तियों को यह मनन करते हुए एकाग्र करना चाहिए कि अहं (मैं) और अपर (दूसरे) का अस्तित्व ही नहीं है तथा ज्ञानी और अज्ञानी एक समान हैं।

कर्म—

साधक को सब कठिनाइयों को यह समझ कर सहना चाहिए कि मैं अपने पूर्व जन्म के कुकर्म का फल भोग रहा हूं। उसे अपने भाग्य से संतुष्ट रहना चाहिए, चाहे सुख हो या दुःख, लाभ हो या हानि। उसको किसी वस्तु की तृष्णा नहीं करनी चाहिए। उसको धर्म (सत्य) का अनुसरण करना चाहिए।

इसी परम्परा के एक अन्य ध्यानी साधक ने अपने शिष्य को निम्नोक्त विधि के अनुसरण का निर्देश दिया है— 'शास्त्र के प्रवचन और अध्ययन को कुछ समय के लिए छोड़ो। कुछ दिन के लिए अपने कमरे में बन्द हो जाओ। गर्दन सीधी कर शांत होकर बैठो और अपने विचारों को एकाग्र करो। अच्छे-बुरे के द्वन्द्वात्मक तर्क को छोड़कर आंतरिक संसार को देखो। ज्ञान उसके लिए 'प्रत्यात्मवेद्य' होना चाहिए।'

ध्यान और समत्व

ध्येय मंजिल है और ध्यान उसका मार्ग है। साधक का ध्येय होता है—शुद्ध आत्मा का अनुभव। आत्मा को आवृत करने वाले हैं—राग और द्वेष। चित्त प्रतिक्षन इसके द्वारा प्रकंपित रहता है। चेतना प्रकंपनों के कारण परिलक्षित नहीं होती। ध्यान के साथ जो प्रतिक्रिया-मुक्ति की बात जुड़ी है या कही जाती है वह इसलिए कि प्रतिक्रिया प्रकंपन है और प्रकंपन से हम ध्येय के सन्निकट नहीं पहुंच सकते। आगम की परिभाषा में प्रतिक्रिया-मुक्ति के लिए शब्द है—समता। साधक समस्त अनुकूल और प्रतिकूल द्वंद्वों में सतत समतावान् रहे, तटस्थ रहे। 'समयाए समणो होइ' श्रमण समता से होता है।

'जो समो सव्वभूएसु, तसेसु थावरेसु य।
तस्स सामाइयं होइ, इति केवलिभासियं।।'

'आत्मद्रष्टा पुरुषों ने कहा है कि सामायिक उसी साधक के होती है जो त्रस, स्थावर, स्थूल और सूक्ष्म चराचर जगत् के प्रति सम रहता है।'

समता के अभाव में ध्यान-साधना अपना कोई प्रतिफल नहीं ला सकती। साधक को प्रारंभ में ही इस सत्य का बोध हो जाना चाहिए कि मेरी प्रत्येक क्रिया में समत्व प्रतिष्ठित रहे। बाहर से होने वाले आघातों के प्रति सतत जागरूक रहना और अपने मन को किंचिदपि आंदोलित नहीं करना, ध्याता के लिए यह नितांत अपेक्षित है। इसलिए ध्यान में प्रतिष्ठित साधकों ने समता और ध्यान को भिन्न नहीं माना। ये दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। आचार्य हेमचंद्र ने कहा है—

'समत्वमवलम्ब्याय, ध्यानं योगी समाश्रयेत्।
विना समत्वमारब्धे, ध्याने स्वात्मा विडम्ब्यते ।।'

'योगी समता का आलंबन लेकर ध्यान के पथ पर अग्रसर बने। समत्व के शुभारंभ के अभाव में वह ध्यान में बैठकर अपने-आपको विडंबित करता है।' (क्रमशः)

श्रमण महावीर

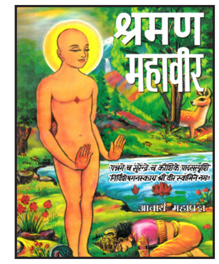

समन्वय की दिशा का उद्‌घाटन

क्या आज का महावीर का अनुयायी समाज समन्वयवादी है? इस प्रश्न का उत्तर सिद्धान्त में नहीं खोजा जा सकता। यह खोजा जा सकता है— चिन्तन-भेद, घृणा अथवा व्यक्तिगत या साम्प्रदायिक महत्त्वाकांक्षा के धरातल पर। सब लोगों का (और एक समाज में रहने वाले सब लोगों का भी) चिन्तन एक जैसा नहीं होता। जब तक उसका समीकरण होता रहता है तब तक वे साथ रह पाते हैं और जब अहं की प्रबलता समीकरण नहीं होने देती, तब चिन्तन-भेद स्थिति-भेद में बदल जाता है। घृणा और महत्त्वाकांक्षा भी स्थिति-भेद उत्पन्न करती हैं। इन परिस्थितियों में बौद्धिक समन्वयवाद व्यवहार को प्रभावित नहीं करता; उसे प्रभावित करता है— अहिंसक समन्वयवाद। भगवान् महावीर का समन्वय का सिद्धान्त वस्तु-जगत् में बौद्धिक है, प्राणी-जगत् में वह अहिंसक है।

कितना कठिन है विचार और व्यवहार में सामंजस्य लाने वाले अहिंसक समन्वय की दिशा का उद्‌घाटन!

सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय

'भिन्न-भिन्न वस्तुओं को देखते के लिए भिन्न-भिन्न आँखों की ज़रूरत नहीं है'— इस वाक्य की अभिधा से असहमति नहीं है, तो इसकी व्यंजना से पूर्ण सहमति भी नहीं है।

गुरु ने शिष्य से पूछा— 'देखता कौन है?'

शिष्य ने कहा— 'आँख।'

गुरु— 'क्या अन्धकार में आँख देख सकती है?'

शिष्य— 'प्रकाश और आँख दोनों मिलकर देखते हैं।'

गुरु— 'आँख भी है और प्रकाश भी है, पर आदमी अन्यमनस्क (कहीं और खोया हुआ) है तो क्या वह देखता है?'

शिष्य— 'मैं अपनी बात में थोड़ा संशोधन करना चाहता हूँ। मन, प्रकाश और आँख—तीनों मिलकर देखते हैं।'

गुरु— 'एक बच्चे ने आग को देखा और उसमें हाथ डाल दिया। क्या उसने आग को नहीं देखा?'

शिष्य— 'बच्चे में बुद्धि का विकास नहीं होता। वास्तव में पूर्ण दर्शन तब होता है जब बुद्धि, मन, आँख और प्रकाश—ये चारों एक साथ होते हैं।'

गुरु— 'एक बुद्धिमान आदमी को मैंने जुआ खेलते देखा है। क्या वह देखता है?'

शिष्य— 'नहीं, सही अर्थ में वही देखता है, जिसकी बुद्धि पर अस्तित्व का वरदहस्त होता है।'

व्यक्ति के दो रूप होते हैं—

व्यक्तित्व और अस्तित्व। अस्तित्व का अर्थ है 'होना' और व्यक्तित्व का अर्थ है 'कुछ होना'। हम नाम-रूप आदि को देखते हैं, तब हमें व्यक्तित्व का दर्शन होता है। हम चेतना के जागरण को देखते हैं, तब हमें व्यक्तित्व की पृष्ठभूमि में क्रियाशील अस्तित्व का दर्शन होता है।

महावीर के व्यक्तित्व का अस्तित्व पर अधिकार होता तो उनकी वाणी में मृदुता और हृदय में क्रूरता होती। उनकी वाणी और हृदय—दोनों में मृदुता का अतल प्रवाह है। इससे प्रतीत होता है कि उनका अस्तित्व व्यक्तित्व पर छाया हुआ था।

व्यक्तित्व के धरातल पर महावीर एक संघ के शास्ता, संघबद्ध धर्म के व्याख्याता और एक पंथ के प्रवर्तक हैं। अस्तित्व के धरातल पर वे केवल 'हैं'। 'होने' के सिवाय और कुछ नहीं हैं। वे न संघ के शास्ता हैं और न शासित, न धर्म के व्याख्याता हैं और न श्रोता, न द्वैतवादी हैं और न अद्वैतवादी। द्वैत और अद्वैत, व्याख्या और श्रुति, शासन और स्वीकृति—ये सब अस्तित्व की शाखाएँ हैं। महावीर की सम्पूर्ण यात्रा व्यक्तित्व से अस्तित्व की ओर है। महावीर ने कहा है–

'जिसे तू मारना चाहता है, वह तू ही है।'

'जिस पर तू शासन करना चाहता है, वह तू ही है।'

'जिसे तू परितप्त करना चाहता है, वह तू ही है।'

'जिसे तू दास बनाना चाहता है, वह तू ही है।'

'जिसे तू उपद्रुत करना चाहता है, वह तू ही है।' (क्रमशः)

3 बातें ज्ञान की

– आचार्यश्री महाश्रमण

तीन पदों से उऋण होना दुःशक्य

इन तीनों के उपकारों से व्यक्ति इतना दब जाता है कि उऋण होना बड़ा मुश्किल होता है। पहले उपकारी हैं—माता-पिता। माता-पिता अपनी संतान को जन्म देते हैं, लालन-पालन करते हैं, पढ़ाते-लिखाते हैं, संस्कार देते हैं, उसकी शादी करते हैं, उसे व्यापार कराते हैं। यह कितना बड़ा उपकार है। संस्कृत साहित्य में तो यहाँ तक कहा गया है कि वह मां शत्रु है और वह पिता दुश्मन है, जो अपने बालक को पढ़ाता नहीं है, जो बालक को अच्छे संस्कार नहीं देता है।

प्रश्न होता है कि यदि हमारे जीवन में माता-पिता का इतना उपकार है तो क्या कोई उपाय है उनके उपकार से उऋण होने का? शास्त्रकार ने कहा कि तुम अपने माता-पिता की चाहे कितनी ही सांसारिक सेवा कर लो, चाहे उन्हें स्नान करा दो, चाहे उत्तम से उत्तम शतपाक या सहस्रपाक तेल से उनकी मालिश कर दो, चाहे स्वादिष्ट से स्वादिष्ट भोजन करा दो, चाहे सुगंधित चूर्ण से उनका उबटन कर दो, आभूषणों से उनके शरीर को विभूषित कर दो, चाहे श्रवण कुमार की तरह उन्हें जीवनभर कावड़ में यात्रा करा दो, इतना करने पर भी उनके उपकार से उऋण नहीं हो पाओगे। यदि तुम उनको धार्मिक बना दो, उन्हें तत्त्वज्ञान सिखा दो, उन्हें केवली प्रज्ञप्त मार्ग में स्थापित कर दो, उनके मन में देव, गुरु, धर्म के प्रति आस्था जगा दो, उनकी आत्मा का उत्थान कर कर दो तो तुम उनके उपकारों से उऋण होने की स्थिति में आ सकते हो। जैसे, किसी के माता-पिता धर्म-कर्म में अनास्था रखते हों और उनकी संतान उन्हें धर्म के मार्ग में स्थापित कर दे तो ऐसी धार्मिक सेवा से माता-पिता के उपकार से उऋण हुआ जा सकता है।

दूसरे उपकारी हैं—भर्ता। कभी कोई धनवान सेठ किसी दरिद्र का आर्थिक सहयोग कर उसका घर बसा दे, उसे कमाई करना सिखा दे, उसे अपने पैरों पर खड़ा कर दे, आत्मनिर्भर बना दे तो ऐसे सेठ के उपकार से उऋण होना बड़ा मुश्किल है। प्रश्न होता है कि ऐसा कौन-सा उपाय है जिससे ऐसे पालन-पोषण करने वाले सेठ के उपकार से उऋण हुआ जा सकता है? शास्त्रकार ने कहा कि ऐसे उपकारी सेठ की चाहे कितनी ही सांसारिक सेवा कर लो, जैसे दुर्भाग्य से किसी दिन वही उपकारी और धनवान सेठ दरिद्र बन जाए और उसी उपकृत व्यक्ति के पास सहयोग मांगने आए, तब वह उपकृत व्यक्ति यह कहे कि 'सेठ साहब! आपने मेरे ऊपर कितना उपकार किया था। मैं आपका ही दिया हुआ खा रहा हूं। आपने मुझे तैयार किया, आगे बढ़ाया, मेरा सारा धन मैं आपको देने को तैयार हूं।' यदि वह अपनी सारी संपत्ति उस सेठ को दे दे, फिर भी वह उसके उपकार से उऋण नहीं हो सकता। यदि वह व्यक्ति उस सेठ को धर्म के मार्ग पर स्थापित कर दे तो वह अपने भर्ता के उपकार से उऋण होने की स्थिति में आ सकते हैं।

तीसरे उपकारी हैं— धर्माचार्य। धर्मगुरु कितनों को दीक्षित करते हैं, शिक्षण देते हैं, समझाते हैं, मार्गदर्शन देते हैं, संयम की साधना में सहयोग देते हैं, संसार समुद्र से पार लगाने में योगदान देते हैं। इस प्रकार धर्माचार्य अनेक आध्यात्मिक उपकार करते हैं। क्या उनके उपकार से उऋण होने का कोई उपाय है? शास्त्रकार ने बताया कि कभी किसी धर्माचार्य का मन किसी कारण से अस्थिर हो जाए, धर्म के प्रति आस्था कमजोर हो जाए, कदाचित पथभ्रष्ट हो जाए, भौतिकता के रास्ते पर चला जाए, ऐसे धर्माचार्य को कोई वापस धर्म में सुस्थिर कर दे, उनकी आस्था को मजबूत बना दे तो वह धर्माचार्य के उपकार से उऋण होने की स्थिति में आ सकता है।

एक बार की बात है, आषाढ़भूति नाम के एक आचार्य हुए। उनके सामने उन्हीं के शिष्य महामारी के प्रकोप से दिवंगत होने लगे। नियति का ऐसा योग बना कि देखते-ही-देखते एक शिष्य विनोद को छोड़कर सभी शिष्य स्वर्गवासी बन गए। जब विनोद भी मरणासन्न अवस्था में आ गया, तब आचार्यप्रवर ने कहा—'वत्स! तुम देवलोक में जाकर पुनः मेरे दर्शन करना और बताना कि देवगति का स्वरूप क्या है?' शिष्य विनोद ने गुरुदेव की इस बात को स्वीकार कर लिया। कुछ ही क्षणों में वह अंतिम शिष्य भी दिवंगत हो गया। वह देवलोक में जाकर ज्योंही गुरुदर्शन के लिए आने को उद्यत हुआ, त्योंही कुछ देवांगनाओं ने उसे वहीं रोक लिया और कहा—'यहाँ का एक नाटक तो देखकर जाओ ताकि अपने गुरु के सामने स्वर्गलोक का गौरव बता सको।' जब शिष्य देवलोक से वापस नहीं आया, तब गुरु ने सोचा कि स्वर्ग-नरक कुछ नहीं है। गुरु का मन अस्थिर हो गया, श्रद्धा टूट गई, स्वर्ग-नरक के अस्तित्व से विश्वास उठ गया।

आषाढ़भूति ने सोचा कि 'मैं तो अनावश्यक ही साधु बना। अब मैं इन कष्टों को क्यों झेलूं? गृहस्थ बनकर मौज-मस्ती का जीवन जीऊंगा।' इस प्रकार धर्माचार्य होने के बावजूद मन अनास्थावान हो गया। वह घर जाने का चिंतन करने लगा। इतने में देवरूप शिष्य का सिंहासन प्रकंपित हुआ। उसने अपने ज्ञान से जाना कि मेरे गुरु श्रद्धा से च्युत हो गए हैं। वह तत्काल भूतल पर आया और एक मायाजाल रचा। उसने पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजस्काय, वायुकाय, वनस्पतिकाय और त्रसकाय नामक छह बच्चों की विकुर्वणा की। (क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा 8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
27 जुलाई - 02 अगस्त 2026

चातुर्मास आध्यात्मिक वैभव पाने का स्वर्णिम अवसर

उत्तर हावड़ा।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 का भव्य चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हुआ। योगक्षेम रैली के उत्तर हावड़ा पहुंचने पर उमेश रॉय राज्यमंत्री पश्चिम बंगाल सरकार ने संत वृंद का स्वागत किया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा -प्रत्येक देश व समाज के अपने सांस्कृतिक मूल्य होते हैं। संस्कृति एक कालजयी तत्व है। उसके अनेक अंग है। उनमें धर्म का स्थान सर्वोपरि व धर्म जीवन का अंतरंग तत्त्व है। वह अब जीवन के लिए उतना ही अनिवार्य है, जितना हवा और पानी। धर्म की प्रेरणा देने वाले संत होते हैं। आज आचार्य श्री महाश्रमणजी की अनंत कृपा से हमने उतर हावडा में सकुशल चातुर्मास मंगल प्रवेश कर लिया है। चातुर्मास आध्यात्मिक वैभव पाने का स्वर्णिम अवसर है। चातुर्मास साधना सिद्धि का द्वार है। चातुर्मास ज्ञान, दर्शन, चारित्र तप की आराधना का पर्व है। चातुर्मास को सफत बनाने में उत्साह, उदारता, आत्मीयता, आराधना व अनुमोदना के सूत्र महत्त्वपूर्ण है। मुनि जिनेश कुमार ने आगे कहा - संतों के आगमन के अवसर पर स्वागत, अभिनंदन किया जा रहा है। यह संतों का नहीं संस्कृति, त्याग, गुरुकृपा व संयम का स्वागत है। संत भारतीय संस्कृति के अनमोल रत्न होते हैं। संत समागम से सत्संस्कार, चेतना का ऊर्ध्वारोहण, अंधकार का नाश व चेतना का आलोक प्राप्त होता है। संतों के समागम से समाज में जुड़ाव होता है। बृहत्तर कोलकाता का श्रावक समाज विनीत व श्रद्धालु है। मंगल प्रवेश जैसे अवसरों पर बड़ी संख्या में उपस्थित होता है। सभी साधुवाद के पात्र है। इस अवसर पर मुनि परमानंदजी ने कहा - चातुर्मास की व्यवस्था चातुर्मास का शरीर है मोक्ष मार्ग की आराधना चातुर्मास की आत्मा है। उत्तर हावडा चातुर्मास सभी के लिये मंगलमय बनें। मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उमेश रॉय (राज्यमंत्री, पश्चिम बंगाल सरकार) ने शहर में संतों के चातुर्मास प्रवास को अपना सौभाग्य बताते हुए जैन समाज के सेवा कार्य की सराहना की। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष संदीप डागा ने दिया। जैन विश्व भारती के न्यासी जतनलाल जी पारख, अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के अध्यक्ष प्रताप सिंह दुगड, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा- कोलकाता के अध्यक्ष शिखरचंद लुणावत, तेयुप हावड़ा के अध्यक्ष बसंत पटावरी, तेरापंथ महिला मंडल, उत्तर हावड़ा की अध्यक्षा सुजाता दुग्गड, टीपीएफ के अध्यक्ष रितेश दुग्गड, अणुव्रत समिति हावड़ा के अध्यक्ष दीपक नखत ने स्वागत में अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन सभा में मंत्री विनीत कोठारी ने किया।

चार्तुमासिक मंगल प्रवेश व भव्य स्वागत का आयोजन

पर्वत पाटीया।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की विदुषी सुशिष्या शासन श्री साध्वी श्री मधुबाला जी आदि ठाणा 5 का तेरापंथ सभा भवन पर्वत पाटीया में भव्य व अनुशासन रैली के साथ मंगल प्रवेश हुआ। साध्वी मधुबाला जी ने नमस्कार महामंत्र के संगान से किया। उसके पश्चात स्थानीय सभा अध्यक्ष संजय बोहरा, महिला मंडल अध्यक्षा सुमन बैद, तेयुप अध्यक्ष अशोक कोचर ने साध्वी वृंद का स्वागत अभिनन्दन किया। शासनश्री साध्वी मधुबाला जी ने कहा पर्वत पाटीया श्रावक समाज में जो श्रद्धा, उत्साह एवं धर्म के प्रति समर्पण का भाव दिखाई दे रहा है,वह परम पूज्य आचार्य प्रवर के आर्शिवाद एवं तेरापंथ धर्मसंघ की गौरवशाली परंपरा का परिणाम है।

साध्वी विज्ञान श्री जी ने कहा तेरापंथी सभा, युवक परिषद् में संघ सेवा के प्रति जो उत्साह समर्पण एवं कार्यभावना दिखाई देती है वही तेरापंथ धर्मसंघ की वास्तविक शक्ति और गौरव है। साध्वी श्री सौभाग्य श्री जी, साध्वी मंजुल यशा जी व साध्वी मेधावी प्रभा जी ने संयुक्त परिसंवाद किया जिसमें ज्यादा से ज्यादा चार्तुमास काल में ज्ञान, दर्शन, चरित्र व तप करते हुए चातुर्मास काल में लाभ लेने की प्रेरणा परिसंवाद के द्वारा दी। संचालन सभा मंत्री अनिल चौधरी व आभार कोषाध्यक्ष प्रदीप पुगलिया ने किया।

चातुर्मासिक मंगल प्रवेश एवं स्वागत समारोह संपन्न

दक्षिण मुंबई।

महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल में चातुर्मासार्थ युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी की प्रबुद्ध सुशिष्या शासन श्री साध्वी कंचनप्रभाजी एवं सहवर्ती शासन श्री साध्वी मंजुरेखाजी आदि ठाणा-5 का भव्य एवं विशाल रैली के साथ मंगल प्रवेश हुआ। मंगल उद्बोधन में शासन श्री साध्वी कंचनप्रभाजी ने कहा कि विभिन्न नगरों से समागत श्रावक-श्राविकाओं में जो श्रद्धा, उत्साह एवं धर्म के प्रति समर्पण का भाव दिखाई दे रहा है, वह परम पूज्य आचार्य प्रवर के आशीर्वाद एवं तेरापंथ धर्मसंघ की गौरवशाली परंपरा का परिणाम है। उन्होंने सभी से चातुर्मास में रात्रि भोजन त्याग, सचित्त एवं जमीकंद का परित्याग तथा तेला, अठाई, मासखमण आदि तपस्याओं एवं धर्माराधना को उत्साहपूर्वक अपनाने का आह्वान किया शासन श्री साध्वी मंजुरेखाजी ने अपने संबोधन में कहा कि तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद एवं महिला मंडल के पदाधिकारियों में संघ सेवा के प्रति जो उत्साह, समर्पण एवं कार्यभावना दिखाई देती है, वही तेरापंथ धर्मसंघ की वास्तविक शक्ति और गौरव है। उन्होंने सभी को चातुर्मास को आत्मविकास एवं आध्यात्मिक साधना का श्रेष्ठ अवसर बनाने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर साध्वी मंजुरेखाजी, साध्वी उदितप्रभाजी, साध्वी निर्भयप्रभाजी एवं साध्वी चेलनाश्रीजी ने प्रेरणादायी गीतों की प्रस्तुति देकर वातावरण को भक्तिमय बना दिया स्वागत भाषण के क्रम में फाउंडेशन के अध्यक्ष कुंदनमल धाकड़, तेरापंथ सभा दक्षिण मुंबई के अध्यक्ष देवेंद्र डागलिया, तेरापंथ युवक परिषद दक्षिण मुंबई के अध्यक्ष सुमित सुराणा आदि ने अपने स्वागत उद्गार व्यक्त किए, इस अवसर पर श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा मुंबई के अध्यक्ष सुरेंद्र कोठारी, भारत जैन महामंडल के राष्ट्रीय अध्यक्ष ख्यालीलाल तातेड, अणुव्रत विश्व भारती से रोशन मेहता, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के सहमंत्री अंकुर लुनिया एवं जोनल कॉर्डिनेटर कमलेश भंसाली की गरिमामयी उपस्थिति में संयम सुपर मैराथन के बैनर का अनावरण भी किया गया घाटकोपर सभा के अध्यक्ष शांतिलाल कोठारी, महिला मंडल की अध्यक्षा मंजू बडाला , आदि की उपस्थिति रही।

अनुशासन रैली के साथ चातुर्मास मंगल प्रवेश

राजराजेश्वरी नगर।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के विद्वान सुशिष्य मुनि आकाश कुमार जी एवं सहवर्ती मुनि हितेन्द्र कुमार जी का राजराजेश्वरी नगर के तेरापंथ भवन में चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश हुआ।

मुनि श्री ने कहा मुझे विशेष प्रसन्नता है कि गुरुदेव के निर्देशानुसार आज हमने राजराजेश्वरी नगर के भवन में चातुर्मास के लिए प्रवेश किया है। हमारे जीवन की सफलता का रहस्य है गुरुकृपा। गुरु के स्मरण मात्र से हर कार्य सुगमता से संपन्न हो जाते हैं। गुरु कृपासे ही हम लगभग 2500 किलोमीटर की यात्रा में हजारों घरों की साथ संभाल करते हुए आज राजराजेश्वरी नगर पधारे हैं। चातुर्मास में यहां जप-तप की खूब वर्षा होगी जो आत्मा को उर्वर बनाएगी एवं धर्म का बगीचा लहलहाएगा। फूलों की नगरी बेंगलुरु में जप-तप की आध्यात्मिक सुरभि फैलेगी। आचार्य भिक्षु के 300 वें वर्ष के समापन को सामूहिक अठाई तप से संपन्न करने का आह्वान किया।

मुनि विनीतकुमार जी ने दोनों संतों के प्रति आध्यात्मिक मंगल कामना करते हुए कहा कि आज क्षेत्र के अनुसार तथा दीक्षा पर्याय के अनुसार बड़ा भाई छोटे भाई के पास आया है।

मुनि हितेन्द्र कुमार जी ने मुनि विनीत कुमार जी ठाणा-2 के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की तथा चातुर्मास में सम्यक् ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र एवं तप की रूपरेखा बताई। तप जप-स्वाध्याय की श्री वृद्धि हो, खूब धर्माराधना हो। यह चातुर्मास ऐतिहासिक और उपलब्धि भरा हो। तेरापंथी सभाध्यक्ष कमलसिंह दुगड़ ने संपूर्ण श्रावक समाज की ओर से मुनिवृन्द का श्रद्धासिक्त स्वागत करते हुए राजराजेश्वरी नगर में प्रथम बार संतों का चातुर्मास हेतु प्रसन्नता व्यक्त करते हुए गुरुदेव के प्रति अनंत कृतज्ञता ज्ञापित की। महासभा के कार्यसमिति सदस्य एवं तेरापंथ ट्रस्ट अध्यक्ष राकेश छाजेड़, तेयुप अध्यक्ष सरल पटावरी, महिला मंडल अध्यक्ष मंजु बोथरा, अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत, अभातेमम से सहमंत्री मधु कटारिया, TPF के साउथ जोन के अध्यक्ष विक्रम कोठारी ने भी विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का कुशल संचालन कोषाध्यक्ष देवेन्द्र नाहटा एवं आभार ज्ञापन मंत्री अमित नौलखा ने किया।

साध्वीवृंद का भावपूर्ण चातुर्मास मंगल प्रवेश

सेलम।

साध्वी संयमलताजी ठाणा-4 का सेलम नगरी में मंगल प्रवेश श्रद्धा, भक्ति एवं उत्साह के साथ संपन्न हुआ। इस पावन अवसर पर सेलम के श्रावक-श्राविकाओं ने साध्वीवृंद का भावपूर्ण स्वागत एवं अभिनंदन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ सेलम सभा के अध्यक्ष प्रवीण बोहरा के स्वागत अभिवंदना से हुआ। उन्होंने साध्वीवृंद का हार्दिक अभिनंदन करते हुए सभी से चातुर्मास का अधिकतम आध्यात्मिक लाभ लेने का आह्वान किया। तेरापंथ महिला मंडल, सेलम की अध्यक्षा सरिता चोपड़ा तथा तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष भरत चोपड़ा ने भी साध्वीवृंद का हार्दिक स्वागत किया। इसके बाद अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की ट्रस्टी नीलम सेठिया ने साध्वीवृंद को चातुर्मासिक मंगल प्रवास की शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए कहा कि उनके पावन सान्निध्य में संपन्न होने वाला प्रत्येक कार्य 'सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्' की भावना को साकार करे। अपने मंगल प्रवचन में साध्वी संयमलताजी के साथ साध्वी मार्दव श्री जी ,साध्वी मनीषा श्री जी एवं साध्वी रौनक प्रभा जी ने मधुर प्रेरणादायी गीतिका के माध्यम से सेलमवासियों को आह्वान किया कि वे चातुर्मास को धर्म, ध्यान, तप एवं आत्म-साधना का स्वर्णिम अवसर बनाएं।

संक्षिप्त खबर

शपथ ग्रहण समारोह

गाँधीनगर-दिल्ली। युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि डॉ. अभिजीतकुमार जी व मुनि जागृत कुमार जीके सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद गाँधीनगर दिल्ली के तृतीय कार्यकाल सत्र 2026-27 अध्यक्ष प्रकाश सुराणा व उनकी टीम का शपथ ग्रहण का समारोह जैन संस्कार विधि से तेरापंथ भवन, विकास मंच, कृष्णानगर दिल्ली मे आयोजित किया गया। संस्कारक व उपासक मनीष छलाणी व महेन्द्र कुमार श्यामसुखा ने पुरे विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपादित करवाया। दिल्ली सभा अध्यक्ष विमल बेंगानी ने नव निर्वाचित अध्यक्ष प्रकाश सुराणा को पद एवं दायित्व की शपथ दिलाई। डॉ. मुनि अभिजीत कुमार जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान कर नव मनोनीत सदस्यों का उत्साह वर्धन किया। इस शुभ अवसर पर आचार्य श्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति दिल्ली महामंत्री सुखराज सेठिया, दिल्ली सभा अध्यक्ष विमल बेंगानी आदि की गरिमामय उपस्थिति रही। इसके साथ कार्यक्रम में अभातेयुप प्रवृत्ति सलाहकार जतन श्यामसुखा, TKM ब्लू ब्रिगेड सदस्य सौरभ सिंघी सहित तेयुप व TKM के लगभग 70-90 से ज्यादा सदस्यगण एवं काफी संख्या में श्रावक श्राविका समाज की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन उपाध्यक्ष प्रथम अंकित श्यामसुखा व शपथ के बाद नवमनोनीत मंत्री राजेश सेठिया ने किया। आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष प्रथम अंकित श्यामसुखा ने किया।

वार्षिक साधारण सभा-प्रतिवेदन का आयोजन

राउरकेला। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधानतेरापंथ भवन में वार्षिक साधारण सभा का सफल आयोजन किया।अध्यक्षा संगीता दूगड़ ने उपस्थित सभी बहनों का स्वागत एवं अभिनंदन किया। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में उन्होंने वर्षभर मंडल द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों, कार्यक्रमों एवं सेवा कार्यों में महिला मंडल की बहनों तथा कार्यकारिणी टीम के सदस्यों द्वारा दिए गए सहयोग एवं सक्रिय सहभागिता की सराहना की। इसके पश्चात मंत्री नीतू जी कोठारी ने वर्षभर आयोजित कार्यक्रमों, कार्यशालाओं, गोष्ठियों एवं विभिन्न परियोजनाओं का विस्तृत वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन विनीता जैन ने किया तथा ज्योति नाहटा ने किया

चुनाव/मनाव कार्यक्रम अयोजित

काँटाबांजी। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद की शाखा परिषद तेरापंथ युवक परिषद काँटाबांजी का चुनाव मनाव 15 जुलाई 2026 को सानंद संपन्न हुआ। जिसमें सर्व समिति से श्री गौरव जी जैन को आगामी कार्यकाल 2026- 27 के लिए अध्यक्ष पद के रूप में मनोनीत किया गया।

श्री उत्सव का भव्य आयोजन

कोयंबटूर। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल द्वारा श्रीउत्सव का भव्य आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। महिला मंडल अध्यक्ष रूपकला भंडारी ने पधारे सभी अतिथियों का स्वागत किया पत्रकार किशोर, प्रिंटिंग में सपोर्ट के लिए निशांत बैद एवं अधिकतम पास वितरित करने के लिए सुमन सुराणा का सम्मान किया गया । धन्यवाद ज्ञापन महिला मंडल मंत्री रेखा मरोठी के द्वारा किया गया । कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री उत्सव संयोजिका बबीता गुनेचा ने किया एंव सह संयोजिका के रूप में चित्रा गोलछा एवं वंदना पारख एवं एडवर्टाइजमेंट के लिए रुचिका मालू का योगदान सराहनीय रहा।

सेवा कार्यक्रम

गंगाशहर। तेरापंथ युवक परिषद ट्रस्ट गंगाशहर के अध्यक्ष देवेन्द्र डागा ने बताया कि सेवा प्रकल्प के अंतर्गत सेवा कार्यक्रम राजकीय सैटेलाइट चिकित्सालय, गंगाशहर में किया गया।

चातुर्मासिक मंगल भव्य प्रवेश

गांधीनगर, बैंगलोर।

आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी पावन प्रभाजी ठाणा 4 का गांधीनगर स्थित तेरापंथ भवन में चातुर्मासिक प्रवेश हुआ। साध्वी श्री जी के मंगलाचरण से आयोजन प्रारंभ हुआ।

साध्वी पावनप्रभा जी ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि हम गुरु इंगित की आराधना हेतु यहां आए हैं हमने लगभग पूरे बैंगलोर के तेरापंथ परिवारों के यहां जाकर उनकी सार सम्भाल की है। अब हमारा चातुर्मास इस भवन में है पूरे समाज को धर्म आराधना करनी है। साध्वी आत्मयशाजी, साध्वी उन्नतयशाजी, साध्वी रम्यप्रभाजी ने बड़े निराले अंदाज़ में इस चातुर्मास में होने वाले आयोजनों की प्रस्तुति दी।

सभा अध्यक्ष प्रकाश बाबेल ने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कहा कि चातुर्मास सफल बने यह हम सभी का दायित्व है गुरुदेव के प्रति हम कृतज्ञ है कि हमें इस वर्ष भी एक विद्वान श्रमशील साध्वी वृंद का चातुर्मास प्रदान किया है। हम सभी कार्यकर्ता हर कार्य हेतु अपने दायित्व निर्वहन हेतु सतर्क एवं तैयार रहे। महिला मंडल अध्यक्षा लक्ष्मी बोहरा एवं मंत्री विजेता रायसोनी के नेतृत्व में स्वागत गीत का संगान किया।

ट्रस्ट अध्यक्ष सुशील चोरड़िया, तेयुप अध्यक्ष विनोद कोठारी, टीपीएफ अध्यक्ष पुष्पराज चोपड़ा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष ललित बाबेल, तुलसी महाप्रज्ञ चेतना केंद्र अध्यक्ष ललित मांडोत, केजीएफ सभा अध्यक्ष श्री गेहरीलाल हिंगड,अखिल भारतीय महिला मंडल से मधु कटारिया ने अपनी भावना प्रस्तुत की।

इस अवसर पर अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत, सहमंत्री रोहित कोठारी, ने भाव प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री सुभाष पोखरणा ने किया तथा दिनेश छाजेड़ ने आभार देते हुए रैली एवं आयोजन व्यवस्था में सहयोग देने वाली सभी कार्यकर्ताओं को साधुवाद दिया।

बंगाल-बिहार की त्रि तेयुप की शपथ विधि

गुलाब बाग।

आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि प्रशांत कुमारजी, मुनि कुमुद कुमारजी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद गुलाब बाग,बलुआ कालियागंज, इस्लामपुर (बंगाल) का एक साथ दायित्व बोध ग्रहण (शपथग्रहण) समारोह आयोजित हुआ।

जनसभा को संबोधित करते हुए मुनि प्रशांत कुमारजी ने कहा - हमारा धर्मसंघ विभिन्न दृष्टिकोणों से समृद्ध है। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद अपने शाखा परिषद के द्वारा अनेकानेक गतिविधियों को संचालित कर रही है। आध्यात्मिक और सामाजिक विकास की ओर गतिमान रहती है। युवक संघ सेवा और विकास करते रहे। हमारे भीतर श्रावकत्व परिपक्व होना चाहिए। गुरु दर्शन, सेवा उपासना की जागरुकता बनी रहें।

युवक परिषद रास्ते की सेवा में जागरुक रहती है तेयुप अध्यक्ष और उनके सदस्यों के प्रति मंगलकामना अपनी शक्ति, सामर्थ्य को सकारात्मक दिशा में नियोजित कर अपना एवं संघ का गौरव बढ़ाए। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद कोषाध्यक्ष विकास बोथरा ने कहा - मुनि श्री के सान्निध्य में दायित्व ग्रहण हो रहा है। तीनों परिषद अपने दायित्व के प्रति सजग रहें। संस्था के विधान के अनुसार कार्य करें। गतिविधियों की जानकारी समय समय पर प्रसारित होने से कार्य को अधिक बल मिलता है।

श्रावक निष्ठापत्र का वाचन राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष विकास बोथरा ने किया। राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष विकास बोथरा ने गुलाब बाग तेयुप अध्यक्ष मोहित संचेती, इस्लामपुर अध्यक्ष मुदित पींचा, बलुआ कालियागंज अध्यक्ष हुलास मालू को अध्यक्षीय शपथ दिलाई।

तीनों अध्यक्ष ने अपनी टीम को शपथ दिलाई।गुलाब बाग तेयुप अध्यक्ष मोहित संचेती ने व्यक्तव्य प्रस्तुत किया। आभार मंत्री रवि बोथरा ने किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन चंदन डागा ने किया।

चातुर्मासिक मंगल प्रवेश व भावभीना स्वागत

ग्रैंड बाजार, कटक।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि मोहजीत कुमार जी सहवर्ती मुनि भव्य कुमार जी एवं मुनि जयेश कुमार जी का कटक नगर में भव्य सीमा प्रवेश हुआ। स्थानीय विधायक सोफिया फिरदौस ने मुनिश्री का कटक नगर सीमा पर भावभीना स्वागत किया। इस अवसर पर श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा,तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद के कार्यकर्ताओं के साथ कटक व भुवनेश्वर तेरापंथ समाज के श्रावक-श्राविकाओं की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही।

स्वागत कार्यक्रम में श्रद्धालुओं को प्रेरणा प्रदान करते हुए मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा आज उत्साह, उमंग का प्रवेश है। श्रद्धा, भक्ति, संयम, संवर का प्रवेश है। अध्यात्म चेतना के जागरण का प्रवेश है।मुनि ने कहा कि हम पुज्य प्रवर की दृष्टि, इंगित की आराधना करते हुए उनके संदेश को सम्पुष्ट कर रहे है। मुनि भव्यकुमार ने आगामी करणीय कार्यों की रुपरेखा बताते हुए ज्ञान, दर्शन, चरित्र तप त्याग से आप्लावित होने का आह्वान किया। मुनि जयेश कुमार जीने ऐतिहासिक तथ्य उजागर करते हुए कहा कि हम आचार्य प्रवर की 2018 चातुर्मास भूमि चेन्नई से 2018 की मर्यादा महोत्सव भूमि कटक में आए है। पूज्य प्रवर की दृष्टि की आराधना करते हुए इस चातुर्मास को अपूर्व सफलता दिलाने हेतु सम्पूर्ण कटक समाज संकल्पित हो। अपने दीक्षा दिवस के अवसर पर उन्होंने आचार्य श्री की दुर्लभ कृपा से जुड़े महनीय घटना प्रसंगों का उल्लेख किया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में नमस्कार महामंत्र समुच्चारण के पश्चात महिला मंडल,कटक की बहिनों ने स्वागत संगान किया। सभाध्यक्ष मुकेश सेठिया ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किया।

ग्रैंड बाजार की ओर से मोहनलाल सिंघी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। भुवनेश्वर सभा मंत्री वीरेंद्र बेताला ने मंगलकामना प्रकट की। कार्यक्रम का संचालन विकास नवलखा ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 जुलाई - 02 अगस्त 2026
हे प्रभो! यह तेरापंथ

युगप्रधान गणाधिपति आचार्यश्री तुलसी की 30वीं पुण्यतिथि पर विशेष

दिल्ली

गणाधिपती पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी का तीसवां महाप्रयाण दिवस का आयोजन आचार्य श्री महाश्रमण जी की विदुषी शिष्या शासन श्री साध्वी सुव्रंताजी ठाणा 4 के सानिध्य में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा दिल्ली द्वारा अणुव्रत भवन के प्रांगण में आयोजित किया गया। शासन श्री साध्वी सुव्रतां जी ने फ़रमाया आकाश की ऊंचाई, पाताल की गहराई, एवं दिशाओं के विस्तार को मापना अति मुश्किल है, वैसे ही आचार्य श्री तुलसी के तेजस्वी व्यक्तित्व के संदर्भ में बताना कठिन है। उनके जीवन में 3 चीजों संघर्ष,भाग्य एवं सहयोग की प्रबलता रही। जहां जाते वहां विरोध संघर्ष भयंकर रूप से होता पर वे उसे हिले नहीं, मुड़े नहीं अपने कार्य क्षेत्र में आगे बढ़ते रहे इसलिए उनकी यश सुरभि दिग दिगंत में फैल गई। शासन श्री साध्वी सुमन प्रभा जी ने कहा गुरुदेव तुलसी दिवा स्वप्न देखने वाले ओर उसको साकार करने वाले विशाल व्यक्तित्व के पुरोधा महापुरुष थे,हम आपके बताए मार्ग का, प्रेरणा का अनुसरण करें। साध्वी कार्तिक प्रभा जी एवं चिंतन प्रभा जी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम में विकास परिषद के संयोजक समाजभूषण मांगीलाल सेठिया, प्रवास व्यवस्था समिति महामंत्री सुखराज सेठिया, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा दिल्ली के अध्यक्ष विमल बैंगानी अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के न्यासी शांति जैन, दिल्ली सभा पदाधिकारीयो सहित श्रावक श्राविका समाज ने उपस्थित रहकर गुरुदेव के प्रति भावांजलि अर्पित की कार्यक्रम में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा गांधीनगर क्षेत्र के श्रावक समाज की विशेष उपस्थिति रही ।कार्यक्रम का संचालन साध्वी चिंतन प्रभाजी ने किया।

हैदराबाद

तेरापंथ महिला मंडल, हैदराबाद के तत्वावधान में तेरापंथ धर्मसंघ के नवम आचार्य, युगद्रष्टा एवं अणुव्रत आंदोलन के प्रणेता आचार्य श्री तुलसी का 30वां महाप्रयाण दिवस 'विसर्जन दिवस' के रूप में श्रद्धासिक्त एवं भावपूर्ण वातावरण में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि दीप कुमार जी एवं सहवर्ती संत मुनि काव्य कुमार जी का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। श्रावक समाज को संबोधित करते हुए मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि 'आचार्य श्री तुलसी के अवदान आज समाज के लिए वरदान सिद्ध हो रहे हैं।' उन्होंने आगे कहा कि अणुव्रत आंदोलन, नैतिकता, संयम और मानवीय मूल्यों के क्षेत्र में उनके द्वारा किए गए कार्य समाज के लिए प्रकाश स्तंभ हैं। आचार्य तुलसी ने व्यक्ति निर्माण के माध्यम से राष्ट्र निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया। मुनिश्री ने कहा कि महाप्रयाण के तीन दशक बाद भी उनका व्यक्तित्व और चिंतन आने वाली पीढ़ियों के लिए अत्यंत प्रासंगिक और अनुकरणीय है। मुनि काव्य कुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्य श्री तुलसी ने धर्म को जीवनोपयोगी बनाकर जन-जन तक पहुँचाया। उन्होंने उपस्थित श्रद्धालुओं का आह्वान करते हुए कहा कि 'विसर्जन दिवस' केवल स्मरण का अवसर नहीं है, बल्कि यह उनके आदर्शों को अपने जीवन में आत्मसात करने का संकल्प लेने का दिवस है। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः स्मरणीय नमस्कार महामंत्र व प्रभावती जोन की युवतियों द्वारा मंगलाचरण के साथ हुआ। महिला मंडल की अध्यक्ष नमिता सिंघी ने स्वागत भाषण दिया। इस अवसर पर समाज के विभिन्न प्रबुद्धजनों ने भी अपने विचार व्यक्त किए एवं आचार्य श्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। कार्यक्रम में सभाध्यक्ष सुशील संचेती सहित अनेक श्रद्धालु उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान महिला मंडल द्वारा भावपूर्ण गीतिका की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम का संचालन मंडल की मंत्री निशा सेठिया ने कुशलतापूर्वक किया।

कांदिवली

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार कांदिवली महिला मंडल द्वारा आचार्य श्री तुलसी की पुण्यतिथि का ओर भावी आयोजित कार्यक्रम श्री उत्सव के बैनर का अनावरण शासन श्री साध्वी विद्यावती जी द्वितीय एवं सहवर्ती साध्वी वृंद के सानिध्य में किया गया। साध्वी श्री जी के मुखारविंद से मंगल पाठ श्रवण कर कार्यक्रम की शुभ शुरुआत की गई ।मंगलाचरण मंडल की बहनों द्वारा किया गया। स्वागत भाषण एवं आचार्य श्री तुलसी की पुण्यतिथि पर महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला कोठारी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी विद्यावति जी द्वारा प्रेरणा पाथेय प्रदान किया गया। आचार्य श्री तुलसी के जीवन दृष्टांत पर एक रोचक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 30 भाई बहनों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। विसर्जन दिवस के उपलक्ष में कांदिवली से लगभग 40 भाई बहनों ने आयंबिल किये। कार्यक्रम में महिला मंडल की संरक्षक परामर्शक बहने, कार्य समिति बहने, निवर्तमान अध्यक्षा कांदिवली सभा अध्यक्ष,मंत्री, एवं TYP अध्यक्ष मंत्री, एवं कांदिवली के लगभग 80 भाइयों और बहनों की विशेष उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन मंत्री रेखा धोखा ने किया।

शिरपुर

अणुव्रत अनुशास्ता गणाधिपति गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी के 30 वे महाप्रयाण दिवस निमित्त शिरपुर मे 'एक शाम गुरु तुलसी के नाम' भक्ति संध्या एवं जाप का आयोजन किया गया। इस महाप्रयाण दिवस को एकासन दिवस के रूप में मनाया गया जिसमें 11 एकासन हुये। भक्ति संध्या की शुरुवात सर्वप्रथम तुलसी अष्टकम से हुई। सामूहिक रूप में जाप और गुरु तुलसी पर आधारित गीतों का संगान हुआ। युवक परिषद् की ओर से गणाधिपति पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी के जीवन पर आधारित Rapid Fire Quiz रखी गई जिसमें सभी ने उत्साह के साथ भाग लिया। मंगलपाठ से कार्यक्रम का समापन हुआ। इस अवसर पर ज्ञानशाला,महिला मंडल एवं शिरपुर सभा की उपस्थिति रही।

विजयनगर

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल विजयनगर द्वारा गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी की 30वी पुण्यतिथि 'विसर्जन दिवस' के उपलक्ष्य में चंद्रा लेआउट स्थित 'सहाना चैरिटेबल ट्रस्ट आश्रम'(यह दृष्टिहीन एवं बधिर कन्याओं का आश्रम है) में खाद्य सामग्री एवं पाठ्य पुस्तक का वितरण किया गया। अध्यक्ष महिमा पटावरी,मंत्री सरिता छाजेड,कोषाध्यक्ष मंजू भंसाली उपाध्यक्ष सुमित्रा बरडीया,सहमंत्री अनीता जीरावला सहभागी बने। सभी पदाधिकारी बहिनों का विशेष सहयोग रहा।

रोहिणी

गुरुदेव तुलसी का महाप्रयाण दिवस शासनश्री साध्वी सुमनश्री जी के सान्निध्य में गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी का 30वां महा-प्रयाण दिवस विसर्जन दिवस के रूप में मनाया गया। सामूहिक जप-अनुष्ठान के पश्चात शासनश्री साध्वी सुमन श्री जी ने धर्म सभा को सम्बोधित करते हुये गुरुदेव श्री तुलसी अध्यात्म जगत के महासूर्य थे। उन्होंने जीवन भर मानव जाति को आलोक बांटा। वे इस युग के राजर्षि थे, देवर्षि थे ब्रह्म ऋषि थे। श्रीतुलसी मानव रत्न थे उनके प्रलम्ब कान, रोशनी से भरे युगल नयन, तेजस्वी आभामंडल और स्फूर्त गजगामिनी गति सबके आकर्षण का केन्द्र था। उनकी वाणी सिद्ध थी। जिसमें जादूई चमत्कार था। जो समाज रूढ़ियों से घिरा हुआ था उसको जगाया। अणुव्रत और नया -मोड जैसे अभियान से नारी चेतना को जगाकर पूरे समाज का कायाकल्प किया। साथ ही साध्वी समाज को विकास के अनेक अवसर प्रदान किये। राष्ट्र की समस्याओं का भी समाधान दिया। अनेक संस्मरणों और प्रसंगों को सुनकर साध्वीश्री जी ने पूरी सभा को भाव विभोर बना दिया। साध्वी सुरेखाजी ने विराट व्यक्तित्व के मधुर प्रसंगो को प्रस्तुत करते हुए गुरुदेव श्री तुलसी को मानवता का मसीहा बताया। साध्वी मधुरलताजी ने साध्वी-श्री जी द्वारा रचित सुन्दर गीत 'आसमां की गोद में छुप गया नूर वो' गीत सुनाते हुए धर्म सभा में भक्ति का दरिया बहा दिया। रोहिणीसभा के अध्यक्ष संजीव जैन ने स्वागत भाषण के साथ अपने विचार रखे। महिला मंडल की मंत्री प्रवीणा सिंघी, कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री पराग जैन ने किया।

घाटकोपर

साध्वी निर्वाणश्रीजी के पावन सान्निध्य में 'विसर्जन दिवस' पर गुरुदेव तुलसी की स्मृतियां की गई। तेरापंथ भवन, घाटकोपर में आयोजित श्रद्धांजली समारोह को सम्बोधित करते हुए विदुषी साध्वी श्रीजी ने कहा- आचार्य तुलसी युग प्रवर्तक थे। उनके इतने अवदान है कि कई ग्रंथ भर जाए। गुरुदेव तुलसी ने मानव मात्र की युगीन समस्याओं का समाधान दिया। अणूव्रत का शंखनाद युग की मांग थी। वह आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने धर्म के मंत्र से जो क्रांति की वह विलक्षण थी। प्रबुद्ध साध्वी डा. योगक्षेमप्रभा जी ने श्रद्धासिक्त उद्गार प्रकट करते हुए कहा- गुरुदेव तुलसी एक दूरगामी सोच, प्रभावक अभिव्यक्ति और सौहार्दपूर्ण व्यवहार के मूर्त रूप थे।उन्होंने तेरापंथ की अवधारणाओं को जन भोग्य बनाया। साध्वी लावण्यप्रभाजी ने आचार्य श्री तुलसी के प्रखर व्यक्तित्त्व के संदर्भ में उद्गार व्यक्त किए। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष शांतिलाल कोठारी, तेयुप अध्यक्ष राकेश सुराणा, उपासक हस्तीमल डांगी, समण संस्कृति संकाय से उपासक मालचंद भंसाली आदि ने अपने विचार व्यक्त किए।

शास्त्री नगर

बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी के पावन सान्निध्य में युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी का 30वां महाप्रयाण दिवस एवं तेरापंथ सभा शास्त्री नगर का शपथ ग्रहण समारोह अत्यंत गरिमापूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। तेरापंथ भवन शास्त्री नगर में आयोजित इस कार्यक्रम में श्रद्धाभिव्यक्ति करते हुए बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी ने कहा -आचार्य तुलसी ने तेरापंथ को एक लघु संप्रदाय के स्वरूप से उठाकर लोकप्रिय धर्मसंघ के रूप में स्थापित किया। उन्होंने युग की आवश्यकता और समय की मांग के अनुरूप धर्मसंघ में अपेक्षित संशोधनों व परिवर्तनों को सहर्ष अंगीकार किया।' मुनिश्री ने उन्हें एक 'प्रेरणास्रोत आचार्य' के रूप में अभिहित करते हुए कहा कि वे अपने प्रत्येक शिष्य की योग्यताओं को निखारने, प्रेरणा देने तथा उन्हें प्रोत्साहन प्रदान करने में सदैव तत्पर रहते थे। इसी क्रम में नवनिर्वाचित अध्यक्ष राजा कोठारी ने जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड़ से शपथ ग्रहण की।

जयपुर

भिक्षु साधना केंद्र में आचार्य श्री तुलसी के 30वें महाप्रयाण दिवस ‘विसर्जन दिवस’ के अवसर पर श्रद्धा, भक्ति एवं प्रेरणा से ओत-प्रोत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह आयोजन मुनि तत्त्वरुचि जी तरुण एवं मुनि संभव कुमार जी (ठाणा–2) के पावन सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात जयपुर शहर महिला मंडल की अध्यक्ष कौशल्या जैन ने अपने भावपूर्ण उद्बोधन में आचार्य तुलसी द्वारा स्थापित मानवीय मूल्यों, अनुशासन को अपनाने का संदेश दिया। इस अवसर पर तेरापंथ समाज की विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भी अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का स्मरण किया। मुनि संभव कुमार जी ने आचार्य तुलसी के लिए स्वयं रचित गीतिका का भावपूर्ण संगान प्रस्तुत कर वातावरण को भक्तिमय बना दिया। अपने प्रेरणादायी प्रवचन में मुनि तत्त्वरुचि जी तरुण ने आचार्य तुलसी के तेजस्वी एवं दिव्य व्यक्तित्व का स्मरण करते हुए उनके साथ बिताए अनेक संस्मरण साझा किए। उन्होंने बताया कि आचार्य तुलसी का व्यक्तित्व आज भी अणुव्रत आंदोलन, नारी जागरण, नैतिक मूल्यों और अनुशासन के माध्यम से समाज का मार्गदर्शन कर रहा है। उन्होंने सभी श्रावक-श्राविकाओं से आचार्य तुलसी के आदर्शों को जीवन में अपनाने का आह्वान किया तथा एक दिवसीय त्याग का प्रत्याख्यान भी करवाया।

मंगल भव्य प्रवेश

बालोतरा।

आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या प्रोफेसर डॉ साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ठाणा5 का हुआ। साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने विशाल परिषद को सम्बोधित करते हुए कहा - गुरु निर्देशित क्षेत्र बालोतरा में पहुँच गई, इसकी मुझे परम प्रसन्नता है। गुरु आशीर्वाद और संकल्प के साथ चले, मंजिल तक पहुँच गए।

लम्बा रास्ता और गर्मी का मौसम था, कल्पनातीत बात लग रही थी पर गुरु कृपा, गुरु शक्ति विघ्नहर्ता होती है। उन्होंने कहा आज बालोतरा में शुभागमन हुआ है, यह अध्यात्म, शुचिता, संकल्प,श्रद्धा, शांति और भक्ति का माध्यम है। हमारी प्रेरणा है हर व्यक्ति भीतर की पवित्रता प्रकट करने का संकल्प करें, पुरुषार्थ करें। यदि सोच में उदारता, सहयोग भाव, प्रगाढ़ श्रद्धा होती है तो विकास के शिखरों पर जा सकता है। हमें सौभाग्य से वीतराग शासन मिला है। मर्यादित अनुशासित तेरापंथ संघ में नेतृत्व करने वाले दिव्य विभूति आचार्य श्री महाश्रमण जी का नेतृत्व मिला यह हमारा सौभाग्य है। साध्वी सुदर्शन प्रभाजी,साध्वी राजुलप्रभाजी, साध्वी चैतन्य प्रभाजी,साध्वी शौर्य प्रभाजी ने सामूहिक महाश्रमण मंगल रिफाइनरी कार्यक्रम की प्रतुति ओर गीत का संगान किया। स्वागत अभिनंदन में तेरापंथ सभा अध्यक्ष राणमल फोलामेहता, महिला मंडल अध्यक्ष चंचल भंडारी, Tpf अध्यक्ष रमेश भंसाली, अणुव्रत समिति अध्यक्ष जवेरीलाल सालेचा,तेयुप द्वारा नवीन सालेचा,ज्ञानशाला ज्ञानार्थी इशिका छाजेड़ ने अपने विचारों ओर भावों से स्वागत अभिनंदन की प्रतुति दी।संचालन सभा सहमंत्री राजेश बाफना ने किया।

तेरापंथ-मेरापंथ कार्यशाला का आयोजन

हावड़ा।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के निर्देशन मे तेरापंथ सभा,शिरपुर द्वारा 'तेरापंथ मेरा पंथ' कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला प्रशिक्षक सूरत से पधारे अर्जुन मेडतवाल (प्रवक्ता उपासक) ने नमस्कार महामंत्र का मंगल उच्चारण करते हुए कार्यशाला का शुभारंभ करवाया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष पंकज गेलडा ने स्वागत वक्तव्य दिया। कार्यशाला में मार्गदर्शन देते हुए प्रशिक्षक अर्जुन मेडतवाल ने कहा - आचार्य भिक्षु हमारे आराध्य हैं। उन्होंने आगमों का गहन अध्ययन किया। धर्म क्षेत्र में व्याप्त शिथिलाचार को समाप्त करने का उन्होंने बीड़ा उठाया। उन्होंने जैन धर्म का जो विशुद्ध रूप जनता के सामने रखा उसीका नाम है तेरापंथ। वर्तमान वर्ष आचार्य श्री भिक्षु का जन्म त्रिशताब्दी वर्ष है। इस अवसर पर हमें तेरापंथ के दर्शन को गहराई से समझना चाहिए। उन्होंने जैन तत्व दर्शन तथा दान-दया के दो पक्ष लौकिक और लोकोत्तर के बारे में विस्तृत प्रकाश डाला। शुद्ध साध्य की प्राप्ति के लिए शुद्ध साधन की आवश्यकता व प्रतिमा पूजा के संबंध में तेरापंथ के दृष्टिकोण को भी विस्तार से प्रस्तुत किया। उन्होंने भिक्षु स्वामी के 3 दृष्टांत के जरिए धर्म की परिभाषा को सरल भाषा में समझाया।आगे जिज्ञासा समाधान का रोचक क्रम चला। तेरापंथ सभा के मंत्री दिनेश गेलडा ने आभार ज्ञापन किया। मंच संचालन कल्पेश गेलडा ने किया।

श्री उत्सव 2026 महिला सशक्तिकरण, सेवा एवं सहयोग का संगम

रिसड़ा।

तेरापंथ महिला मंडलद्वारा आयोजित दो दिवसीय श्री उत्सव 2026अत्यंत भव्यता, उल्लास और अभूतपूर्व सफलता के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ पवित्र 'णमोकार महामंत्र'के मंगल संगान के साथ हुआ। महिला मंडल की बहनों ने अपने हाथों पर मंडल ने मेहंदी रचाकर इस उत्सव का एक अनोखा और रचनात्मक प्रचार किया। मुख्य अतिथि शशि सिंह झा (कॉउंसलर, रिसड़ा) अध्यक्ष मनोज गुलगुलिया, पूर्व अध्यक्ष प्रदीप महनोत, मंत्री सुनील गुलगुलिया अनेक गणमान्य अतिथियों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। महिला मंडल के पदाधिकारी गण कार्य समिति बहने मंडल और श्री उत्सव कार्यक्रम की संयोजिका समता बैद, पिंकी बैद, मधु महनोत, बबीता घोड़ावत रंगोली चोरडिया श्री उत्सव के मुख्य आकर्षण मेले में तेरापंथ समाज की बहनों तथा अन्य सहयोगियों द्वारा 33 आकर्षक स्टॉल लगाए गए।

पृष्ठ 1 का शेष

मल्लाह कभी मल्लाह से...

वैसे ही साधक को अपने गुरु और धर्माचार्य से आत्म-कल्याण का मार्ग पाना चाहिए।

२७ से ३१ जुलाई तक 'पंचरंगी तप' का बड़ा आह्वान

१. भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष : स्वामी भिक्षु के ३००वें जन्म वर्ष के समापन का समय निकट है। इस योगक्षेम वर्ष में आचार्यश्री ने श्रावक-श्राविकाओं के लिए २७ जुलाई से ३१ जुलाई तक पंचरंगी तप का विशेष कार्यक्रम घोषित किया।

२. कर्म निर्जरा का मार्ग : पूज्य प्रवर ने सभी को तपस्या में एक-एक कदम आगे बढ़ाने की प्रेरणा देते हुए कहा कि तप भी शरीर रूपी नौका को बिना छेद की बनाने का पुरुषार्थ है, जिससे कर्मों की निर्जरा होती है।

'कहाँ है वो शाश्वत...

लोकाग्र स्थित मोक्ष ही है असली 'शाश्वत स्थान'–

१. जहाँ आधि-व्याधि और बुढ़ापा नहीं : शास्त्रों का हवाला देते हुए आचार्यश्री ने बताया कि सृष्टि में एक ऐसा क्षेम, शिव और अनाबाध स्थान है जो लोक के अग्र भाग में स्थित है—वही 'मोक्ष' है। वहाँ न बुढ़ापा है, न शारीरिक वेदना और न कोई बीमारी।

२. ४५ लाख योजन का क्षेत्र : भवसागर का अंत करने वाले मुनि आठों कर्मों से मुक्त होकर इस स्थान को प्राप्त करते हैं।

४५ लाख योजन के इस क्षेत्र में अनंत सिद्ध आत्माएँ समा जाती हैं। वहाँ पहुँचने के बाद जीव को पुनः संसार में नहीं आना पड़ता।

बोलती किताब

समस्या को देखना सीखें

विचारों की भिन्नता और निर्विचार की एकता

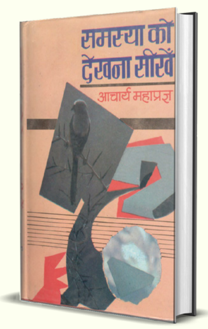

चेतना की दो मुख्य अवस्थाएं हैं—विचार और निर्विचार। इस संसार में हर मनुष्य विचारों के बंधन में बंधा हुआ है और जितने मनुष्य हैं, उतने ही अलग विचार हैं। विचारों की यह भिन्नता वास्तव में हमारी वैचारिक स्वतंत्रता का प्रतीक है, इसलिए सभी के विचारों को एक करने की कोशिश करना उनकी स्वतंत्रता में हस्तक्षेप करने जैसा है। इसके विपरीत, यदि हम सचमुच एकता और समरसता चाहते हैं, तो उसका एकमात्र अचूक सूत्र 'निर्विचार' होना है। जहाँ विचार शांत होकर निर्विचार में विलीन होते हैं, वहीं परम सत्य पूर्ण रूप से प्रकट होता है।

अध्यात्म कोई संकीर्ण मार्ग नहीं, बल्कि सत्य की खोज और उसे प्राप्त करने का राजमार्ग है। प्रस्तुत पुस्तक में समाहित विचार इसी अध्यात्म के रस से सींचे गए हैं, इसलिए इनमें किसी भी प्रकार का दुराग्रह या हठ नहीं, बल्कि समन्वय की सुंदर भावना छिपी है। यहाँ सत्य को किसी एक नजरिए से नहीं, बल्कि 'अनेकांत' और सापेक्षता के दृष्टिकोण से देखा गया है। जीवन की किसी भी समस्या को सही ढंग से समझने और सुलझाने की कला ही वास्तव में सापेक्षता का दृष्टिकोण है, जो हमें निरपेक्ष होने के भ्रम से बचाती है।

इस संसार में सुख और दुख का चक्र निरंतर चलता रहता है, लेकिन आम इंसान सुख से ज्यादा दुख का अनुभव करता है। इसका कारण यह है कि मनुष्य को समस्या को सही ढंग से देखना नहीं आता, जिसके चलते परेशानियां उसके जीवन में स्थायी आसन बिछाकर बैठ जाती हैं। यदि हम अपने विवेक के 'तीसरे नेत्र' को जाग्रत कर लें, तो दुख अपने आप कम होने लगते हैं। जीवन के कष्टों को मिटाने का सबसे बड़ा महामंत्र यही है कि हम समस्याओं से भागें नहीं, बल्कि तटस्थ होकर उन्हें देखना और समझना सीखें।

इस गहरे दार्शनिक और आध्यात्मिक ज्ञान को पाठकों तक सुलभ रूप में पहुँचाने में कुशल संपादन की बहुत बड़ी भूमिका रही है। मुनि दुलहराज जी लंबे समय से साहित्य-संपादन के कार्य में पूरी दक्षता के साथ लगे हुए हैं। उनके साथ ही, इस विशिष्ट पुस्तक को अंतिम रूप देने और इसे निखारने में मुनि धनंजयकुमार जी ने भी अत्यंत निष्ठा और कड़े श्रम के साथ संपादन का कार्य किया है। आचार्य महाप्रज्ञ जी के इन विचारों से सजी यह कृति समाज को जीवन जीने की एक नई दृष्टि प्रदान करेगी।

इस पुस्तक को ऑनलाइन पढ़ने के लिए
अभी डाउनलोड करें
सम्बोधि ई-लाइब्रेरी ऐप्प
Sambodhi E-Library
SCAN HERE
Readable & Audible Mobile Application

पुस्तक प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
आदर्श साहित्य विभाग,
जैन विश्व भारती लाडनूं
+91 87420 04849
books.jvbharati.org
books@jvbharati.org

'श्री उत्सव' का भव्य आयोजन

नागपुर।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल नागपुर द्वारा श्री उत्सव एक कदम स्वावलंबन की ओर' प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य महिला सशक्तिकरण,कार्यकुशलता को बढ़ावा देते हुए आत्मनिर्भर तथा आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने हेतु मंच प्रदान करना रहा।कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण के साथ हुआ तत्पश्चात मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत की मनभावन प्रस्तुति दी गई। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा प्रमिला मालू ने पधारें हुए सभी अतिथियों का स्वागत किया एवं शुभकामनायें प्रेषित की। तेरापंथ सभा अध्यक्ष संजय पुगलिया ने मंडल को बधाई देते हुए कहा इसी तरह और कार्य करते रहे हम सदैव आपके साथ हैं।

तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष प्रियंक छाजेड़ एंव टीपीएफ अध्यक्ष राहुल कोठारी ने मंडल के कार्यों की सराहना की ।कार्यक्रम का कुशल संचालन एवं आभार ज्ञापन मंत्री सुमन मालू ने किया। इस कार्यक्रम की जानकारी प्रचार प्रसार मंत्री मनीषा नखत ने दी।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 जुलाई - 02 अगस्त 2026

भीतर संतोष का धन आते ही, संसार के सारे वैभव धूल हो जाते हैं : आचार्यश्री महाश्रमण

अनुशास्ता की ओजस्वी देशना; गृहस्थों को व्यापार-धंधे में पूरी ईमानदारी और पारदर्शिता बनाए रखने का दिया पावन संदेश

लाडनूं।
14 जुलाई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अनुशास्ता, शांतिदूत, महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी ने प्रातःकालीन मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में सुधर्मा सभा को संबोधित किया। पूज्य प्रवर ने 'भवतृष्णा का छेदन करें' विषय पर अपनी ओजस्वी वाणी से प्रकाश डाला।

मनुष्य के हृदय में तृष्णा की बेल : विषफल देने वाली भवतृष्णा–

१. हृदय की अदृश्य लता : आचार्य प्रवर ने फरमाया कि हर मनुष्य के हृदय के भीतर एक ऐसी बेल फैली रहती है, जो जीवन में केवल विषतुल्य कड़वे फल ही पैदा करती है। यह घातक लता कुछ और नहीं, बल्कि हमारी 'भवतृष्णा' है।

२. लोभ और दुःख का कारण: तृष्णा का सीधा अर्थ है— जो हमारे पास नहीं है, उसे पाने की तीव्र इच्छा। यही लालसा मनुष्य के भीतर लोभ जगाती है और उसे जीवनभर अशांत रखती है।

इच्छाओं के दो रूप:प्रशस्त और अप्रशस्त का भेद–

१. प्रशस्त इच्छा (सच्चा पुरुषार्थ): वर्तमान में धर्मसंघ में 'योगक्षेम वर्ष' चल रहा है। इस संदर्भ में नया सद्ज्ञान पाना, स्वाध्याय, सेवा और साधना की इच्छा रखना प्रशस्त इच्छा है। यह इच्छा मनुष्य को ऊपर उठाती है।

२. अप्रशस्त इच्छा (संसार का बंधन): सांसारिक तृष्णा, भौतिक आकांक्षा और बाहरी चमक-दमक की लालसा रखना अप्रशस्त इच्छा है। यही बेल जीवन में केवल कड़वाहट और तनाव भरती है।

संतोष धन की महिमा : गृहस्थ जीवन में इच्छा-परिमाण व्रत–

१. संत जैसा गृहस्थ जीवन: आचार्यश्री ने फरमाया कि कई गृहस्थ ऐसे भी होते हैं जिनकी संयम चेतना साधुओं से भी अधिक होती है। वे गृहवास में रहकर भी संत जैसा मर्यादित जीवन जीते हैं।

२. व्यापार में पारदर्शिता : श्रावक के बारह व्रतों में पांचवां व्रत 'इच्छा परिमाण व्रत' (इच्छाओं की सीमा तय करना) है। गृहस्थों को अपने व्यापार-धंधे में भी पूरी ईमानदारी और पारदर्शिता रखनी चाहिए।

> इच्छाओं को सीमित करना ही अशांत मन को शांत करने का एकमात्र मंत्र है।
> **–आचार्यश्री महाश्रमण**

अणुव्रतों के पालन का आह्वान और मर्यादा–

१. इच्छाओं का परिसीमन : पूज्य प्रवर ने गृहस्थों को व्यावहारिक मार्ग दिखाते हुए कहा कि यदि कठिन महाव्रतों को स्वीकार करना संभव न हो, तो अणुव्रतों का यथासंभव पालन करें।

२. दैनिक चिंतन का नियम : मनुष्य को हर क्षण यह चिंतन रखना चाहिए कि वह अपने भीतर बैठी इस विषतुल्य भवतृष्णा को जितना हो सके कम करे और अपनी तृष्णाओं को सीमित करे।

'प्रमाद और हंसी-मजाक से खाली होता है पुण्य का बैंक' : आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्य प्रवर की सीख:पुण्य कोई परमानेंट फिक्स डिपॉजिट नहीं है; अगर लाइफ में सक्सेस और अनुकूलता चाहिए, तो संयम से बढ़ाएं अपना आत्म-धन

लाडनूं।
16 जुलाई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रातःकालीन मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में सुधर्मा सभा को पावन प्रतिबोध प्रदान किया। आज के निर्धारित विषय ''उत्तम जाति का घोड़ा'' को उत्तरज्झयणाणि आगम में वर्णित ऐतिहासिक केशी-गौतम संवाद के माध्यम से पूज्य प्रवर ने अत्यंत मार्मिक ढंग से विवेचित किया।

विवेक ही जीवन का आधार : हंस की तरह करें करणीय का चयन–

१. अविवेक से बचें: आचार्यप्रवर ने फरमाया कि आदमी को सहसा बिना सोचे-समझे कोई कदम नहीं उठाना चाहिए। कार्य करने में हमेशा विवेक होना बहुत जरूरी है।

> ज्ञान की लगाम न हो तो मन रूपी दुष्ट घोड़ा जीव को ले जाता है पतन की ओर
> **–आचार्यश्री महाश्रमण**

२. क्षीर-नीर सा न्याय: मनुष्य को उचित-अनुचित, हित-अहित और कर्तव्य-अकर्तव्य का पूरा ध्यान रखना चाहिए। जिस प्रकार हंस दूध और पानी को अलग कर देता है, वैसे ही मनुष्य को करणीय और अकरणीय का अंतर समझना चाहिए।

पुण्य की महिमा और साधु जीवन में प्रमाद का खतरा:

१. अनुकूलताओं का आधार: पुण्य के योग से मनुष्य को यश, कीर्ति, पद-प्रतिष्ठा और अनुकूलताएं मिलती हैं। पुण्य का थोड़ा अर्जन हो तो शरीर स्वस्थ रहता है और जीवन में सहयोग बना रहता है।

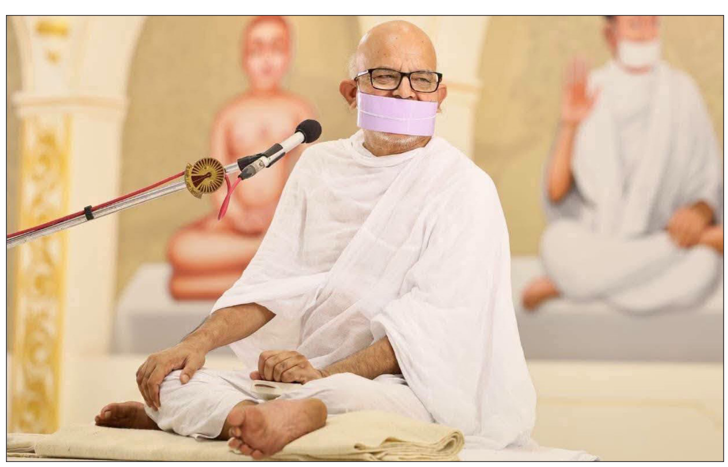

२. प्रमाद से पुण्य का क्षय: यदि कोई साधु अच्छे परिवार में जन्म लेकर छोटी उम्र में दीक्षित हो जाए, पर बाद में प्रमाद, हंसी-मजाक, विकथा और खान-पान में रस लेने लगे, तो उसका पुण्य कम हो जाता है।

३. संवर और निर्जरा ही धर्म: पूज्य प्रवर ने स्पष्ट किया कि पुण्य कोई बहुत बड़ी बात नहीं है, असली धर्म तो निर्जरा है। मोक्ष पाने के लिए हमें संवर और निर्जरा पर ही ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

स्वस्थ शरीर से ही संभव है साधना और लंबा विहार–

१. शरीर की उपयोगिता: साधु का शरीर यदि ठीक रहता है, तो वह सुचारू रूप से व्याख्यान दे सकता है, धर्म यात्राएं कर सकता है और श्रम उठा सकता है।

२. पुण्य की लालसा का निषेध: स्वस्थ शरीर होने पर वाणी सही रहती है और एक-दो घंटे तक व्याख्यान देना संभव होता है। इतना पुण्य रहने से साधना में सहयोग मिलता है, परंतु पुण्य की लालसा कभी नहीं रखनी चाहिए।

मन रूपी दुष्ट अश्व पर ज्ञान की अचूक लगाम–

१. उन्मार्ग पर ले जाता है मन: आगम के हवाले से आचार्यश्री ने फरमाया कि हमारा मन एक दुष्ट और भयंकर घोड़े की तरह है, जो बिना सोचे कहीं भी दौड़ लगा देता है। हर जीव इस पर सवार है और यह उसे गलत रास्ते पर ले जाता है।

२. श्रुत (ज्ञान) की लगाम: जो मनुष्य अपने मन रूपी दुष्ट घोड़े पर ज्ञान रूपी लगाम कसकर रखता है, वह कभी गलत रास्ते पर नहीं जाता। ज्ञान के बल पर ही इस दुष्ट अश्व को उत्तम जाति का घोड़ा बनाया जा सकता है।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

समाधि-मरण : समाधि का वातावरण

ममता और समता– ये विभाजन रेखाएं हैं असमाधि और समाधि की। जो ममता के साथ मरता है, वह असमाधि मरण से मरता है। जिसके जीवन में समता होती है, उसकी मृत्यु भी समाधि के क्षणों में होती है। आचार्य भिक्षु समता के महान् साधक थे। उन्होंने ममता पर विजय पाई। उनकी मृत्यु पूर्ण समाधि अवस्था में हुई। समाधि से मरने वाला पीछे वातावरण में समाधि छोड़ जाता है।

वे महाप्रयाण कर गए। कुछ समय बाद साधुओं ने उनके शरीर का व्युत्सर्ग किया और अर्हत् एवं सिद्ध की स्मृति कर कायोत्सर्ग की मुद्रा में बैठ गए।

आचार्य भिक्षु के महाप्रयाण का समाचार सुन हजारों श्रावक इकट्ठे हो गए। ग्रामवासी लोग उनके शरीर को बैकुण्ठी में बिठा दाह-संस्कार के लिए ले गए। पीछे हजारों व्यक्ति प्रयाण-यात्रा में चल रहे थे। गांव के बाहर नदी के तट पर उनका दाह-संस्कार किया गया। उनका समाधि-स्थल आज भी हजारों-हजारों लोगों के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हुआ मौन भाव से समाधि का सृजन कर रहा है।

साप्ताहिक प्रेरणा

''नवकार महामंत्र'' की एक माला फेरे।।

क्या आप जानते हैं?

सोने व चांदी का बर्क तथा बर्क युक्त वस्तुएं दवाई के अतिरिक्त गोचरी में अग्राह्य हैं।

जानें तेरापंथ को पहचाने स्वयं को

मेरा भविष्य

प्रत्येक मनुष्य को अपने आने वाले कल की चिंता होती है। शायद ही कोई प्राणी होगा जिसे यह चिंता नहीं होगी। प्रश्न यह होता है कि क्या हम आने वाले भविष्य को जान सकते हैं? तो इसका उत्तर है 'हाँ' इसको जानने की विधि है, एक सिस्टम है। इसको जानने का माध्यम है हमारे विचार। हमारे विचार लोक से कर्मों को आकर्षित करते हैं। मन है माध्यम, हम जैसे-जैसे विचार करते हैं अथवा उन्हें जीने लग जाते हैं तो वैसे ही अणुओं को अपनी ओर खींचने लग जाते हैं, फलतः हमारे आस-पास वैसे ही लोग होने लग जाते हैं और आस-पास का वातावरण भी वैसा ही बनने लग जाता है। धीरे-धीरे सोच और वातावरण के योग से हमारा भविष्य वैसा ही बनने लगता है। हम फिर परेशान हो जाते हैं कि ऐसा क्यों हो रहा है? हम ऐसा चाहते नहीं हैं परन्तु सोचा ही लेते हैं, इस कारण से ऐसा घटित होता है। सद्भाग्य के इच्छुक मानव सत्पुरूषार्थ करें परन्तु सद्विचार अवश्य रखें। एक अच्छा विचार अच्छे भविष्य की नींव हैं, अतः महापुरूषों की वाणी है कि सदा सकारात्मक सोचें।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 जुलाई - 02 अगस्त 2026

'मौत की गारंटी पक्की है! लाइफ इंश्योरेंस नहीं, धर्म का प्रीमियम ही बचाएगा' : आचार्यश्री महाश्रमण

गृहस्थों को आचार्यश्री की सीख—चिंता छोड़ो, आत्म-चिंतन और संतोष से ही प्रस्फुटित होगा असली आनंद

लाडनूं।
17 जुलाई, 2026

अखण्ड परिव्राजक, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रातःकालीन मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में सुधर्मा सभा को अपने पावन वचनामृत से सिंचित किया। आज के विशेष विषय ''बुढ़ापा, मृत्यु से कैसे बचें'' को उत्तरज्झयणाणि आगम के गूढ़ रहस्यों के माध्यम से पूज्य प्रवर ने अत्यंत सरल और मर्मस्पर्शी ढंग से समझाया।

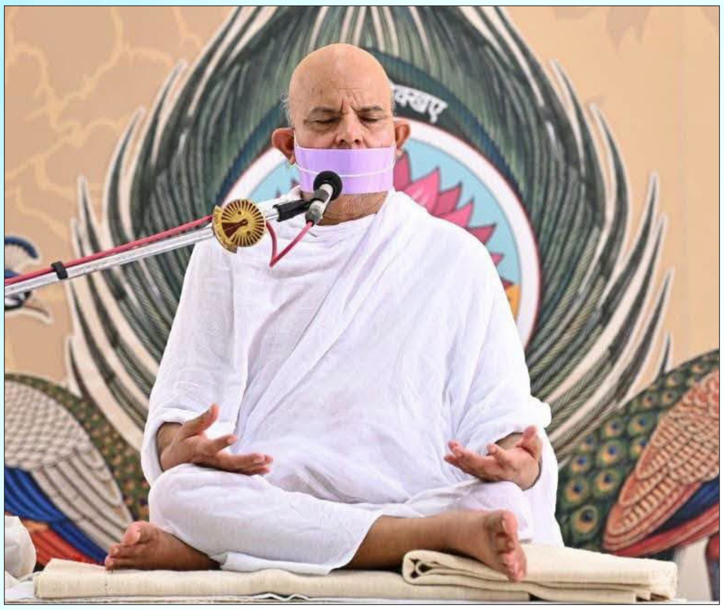

संसार का भयंकर वेगः कहाँ मिलेगी जीव को सच्ची शरण?

१. महाउदक का बहावः आचार्यप्रवर ने फरमाया कि यह संसार पानी के एक बहुत बड़े और तेज वेग (महाउदक) की तरह है, जिसमें सभी प्राणी बहे जा रहे हैं।

२. चार बड़े सवाल : इस तेज बहाव में बहते हुए जीवों के लिए सच्ची शरण क्या है? उनकी गति, प्रतिष्ठा और सुरक्षित द्वीप कौन सा है? इन जलते हुए सवालों का जवाब आगम में विस्तार से दिया गया है।

बुढ़ापा और मृत्यु अनिवार्य, सिर्फ 'धर्म' ही है सुरक्षित द्वीप

१. मृत्यु सबकी निश्चित : हर जीव ने अनंत बार जन्म और मरण का चक्र पूरा किया है। जीवन में बुढ़ापा और शारीरिक कष्ट (जरा) आएं या न आएं, लेकिन मौत का आना हर प्राणी के लिए शत-प्रतिशत निश्चित है।

२. धर्म का मजबूत द्वीप : बुढ़ापे और मौत के इस थपेड़े से बचाने वाला एकमात्र सुरक्षित टापू 'धर्म' है। धर्म एक ऐसा द्वीप है जहाँ जरा, कष्ट और मृत्यु के वेग का कोई प्रवेश नहीं होता।

३. परम गति और मोक्ष : धर्म ही जीवों को दुःखों से मुक्ति दिलाकर मोक्ष तक ले जाता है। अरिहंत और सिद्ध भी इसी धर्म की साधना से बनते हैं, इसलिए मूल शरण केवल 'केवली प्रज्ञप्त धर्म' ही है।

> चिंता में जियोगे तो बिखर जाओगे, वर्तमान में जियोगे तो निखर जाओगे।
> –आचार्यश्री महाश्रमण

साधुओं के चेहरों पर दिखने वाले आध्यात्मिक आनंद का असली राज

१. कठोर जीवन में भी प्रसन्नताः साधु संत तमाम भौतिक सुख-सुविधाओं को छोड़कर बेहद कष्टमयी और कठोर जीवन जीते हैं, फिर भी उनके चेहरों पर हमेशा अलौकिक शांति और मुस्कान तैरती है।

२. वर्तमान में जीना : इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि साधना में लीन साधु न तो अतीत (पास्ट) की पुरानी स्मृतियों में खोए रहते हैं और न ही भविष्य (फ्यूचर) की चिंता करते हैं। वे पूरी तरह आज यानी वर्तमान में जीते हैं।

३. चिंता नहीं, चिंतन : साधु कभी किसी बात की फालतू चिंता नहीं करते, बल्कि आत्म-चिंतन करते हैं। पूरी तरह संतोष में रहने के कारण उनके भीतर से आध्यात्मिक आनंद फूटता है।

गृहस्थों के लिए सुखमय जीवन का अचूक महामंत्र

१. अनावश्यक यादों से बचें : पूज्य प्रवर ने गृहस्थों को सीख देते हुए कहा कि आम आदमी को भी अतीत की फालतू यादों और भविष्य की अंधी आकांक्षाओं से जितना हो सके, दूर रहना चाहिए।

२. मध्यस्थ भाव और संतोषः अगर सांसारिक जीवन में सुखी रहना है, तो परिस्थितियों के बीच मध्यस्थ भाव (न्यूट्रल) रखकर संतोष के साथ जीने का अभ्यास आज से ही शुरू कर देना चाहिए।

योगक्षेम वर्ष चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पवन एच जैन द्वारा मै.आर.डी. प्रिंटर्स एण्ड पब्लिसर्स प्राइवेट लिमिटेड बी 48, सेक्टर 8, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश - 201301 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।